अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

सर्वोदय जगत

□ मूल्य : 5.00

□ अंक : 19

□ 16-31 मई, 2014

□ वर्ष : 37

प्रयोगों का आधार आत्मनिरीक्षण

इन प्रयोगों के बारे में किसी भी प्रकार की सम्पूर्णता का दावा नहीं करता। वैज्ञानिक अपने प्रयोग अतिशय नियमपूर्वक, विचारपूर्वक और बारीकी से करता है। फिर भी उनसे उत्पन्न परिणामों को वह अन्तिम नहीं कहता, अथवा वे परिणाम सच्चे ही हैं इस बारे में वह साशंक नहीं तो तटस्थ अवश्य रहता है। अपने प्रयोगों के बारे में मेरा भी वैसा ही दावा है। मैं ने खूब आत्म-निरीक्षण किया है, एक-एक भाव की जाँच की है, उसका पृथक्करण किया है। किन्तु उसमें से निकले हुए परिणाम सबके लिए अन्तिम ही हैं, वे सच्चे हैं अथवा वे ही सच्चे हैं, ऐसा दावा मैं कभी नहीं करना चाहता। हाँ, यह दावा मैं अवश्य करता हूँ कि मेरी दृष्टि से ये सच्चे हैं, और इस समय तो अंतिम जैसे ही मालूम होते हैं। अगर ऐसे न मालूम होते हों, तो मुझे उनके सहारे कोई भी कार्य खड़ा नहीं करना चाहिए। लेकिन मैं तो पग-पग पर जिन वस्तुओं को देखता हूं, उनके त्याज्य और ग्राह्य ऐसे दो भाग कर लेता हूँ, और जिन्हें ग्राह्य समझता हूँ उनके अनुसार अपना आचरण बना लेता हूँ।

('सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से)

–महात्मा गांधी

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत

वर्ष : 37, अंक : 19
16-31 मई, 2014
सर्व सेवा संघ
द्वारा प्रकाशित
अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र

संपादक
बिमल कुमार
मो. 9235772595
प्रसार व्यवस्थापक
उमेश कुमार

मूल्य : पांच रुपये
शुल्क
वार्षिक : 100 रुपये
आजीवन : 1,000 रुपये
खाता सं. : 383502010004310
IFSC : UBIN-0538353
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, राजघाट, वाराणसी

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ-प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-221 001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
sarvodayavns@yahoo.co.in
Website : sssprakashan.com

विज्ञापन दर
पूरा पृष्ठ : 2000 रुपये
आधा पृष्ठ : 1000 रुपये
चौथाई पृष्ठ : 500 रुपये

अंदर के पृष्ठों पर...

1. कविता : साहब का मकान... 2
2. अगला कदम 3
3. कसौटी पर गांधीजन... 4
4. गांधीवादी संस्थाओं का... 5
5. विदेशी कविता का हिन्दी... 6
6. टिहरी बांध : उजड़े पर... 7
7. स्वच्छता और पवित्रता... 8
8. सर्व सेवा संघ की नयी... 10
9. घोषणापत्रों का अन्वेषण... 11
10. पहचान तो लें विरासत... 13
11. कार, ट्रक व विवाह... 14
12. हम और हमारा घर... 15
13. समाजवादी चिन्तक सुनील... 17
14. यथार्थ लोकतंत्र में जनता... 18
15. गतिविधियां एवं समाचार... 19
16. क्या दिल है हिन्दुस्तानी?... 20

कविता

साहब का मकान

❑ प्रो. बसन्ता

मकान बन रहा है
साहब का उस गली में।
दो बेटियां हैं पढ़ती
उनकी, वनस्थली में।।

घूस की कमाई पर
मूंछों पर ताव देते।
दस रुपये हो या हजार,
प्रेम से ले लेते।।

दुख दर्द गरीबों का
विचलित न उनको करता।
शातिर हैं वे लुटेरे,
पैसे से मन न भरता।।

पत्नी उनकी नवेली
चलती संवर संवर कर।
वह गर्व से मचलती
गहने बहुत पहन कर।।

सालों से मकान उनका
बनता ही जा रहा है।
न जाने इतना पैसा
कहां से आ रहा है।।

श्रमिक जो काम करते
उनको झिड़कते रहते।
आंखें दिखा-दिखा कर,
पैसे कतरते रहते।।

कुर्सी पर बैठ करके
साहब निरीक्षण करते।
क्या खूब यह महल है
फिर सीढ़ियों पर चढ़ते।।

पत्नी को बड़े प्यार से
छत पर हैं वे बुलाते।
क्या खूब कमाता हूँ,
हंस कर उसे सुनाते।।

मजदूर वर्ग मन में
कुढ़ते ही रहते निश दिन।
यह जोंक है हम सबका
यही सोचते हैं हर दिन।।

इस मकान की चमक में
हम सब का खून शामिल।
हड्डी हमारी नींव है,
जिस पर खड़ी है मंजिल।।

गरीबों की हड्डी पसली से
बनती है जो दीवारें।
प्रतिध्वनित होकर आहें
बन जाती हैं चीत्कारें।।

चीत्कारों से महल कभी
खंडहर में बदल जाते।
जब कांपती दीवारें,
इतिहास बदल जाते।।

❑ *विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, सरदार वल्लभ भाई पटेल महाविद्यालय, भभुआ (कैमूर) बिहार।*

संपादकीय

अगला कदम

राजनीतिक पार्टियों द्वारा जो विमर्श होता है या जो प्रचार होता है, उसका दायरा चुनाव के पूर्व अत्यधिक विस्तार ग्रहण कर लेता है। उस दौर में लोक-आंदोलन से संबंधित विमर्श या तो हाशिये पर चला जाता है, या वह भी चुनाव-सापेक्ष हो जाता है।

लेकिन जैसे ही चुनाव खतम होंगे, राजनीतिक पार्टियों द्वारा लोगों के साथ संवाद का दायरा बहुत सिकुड़ जायेगा। ऐसे में लोक-आंदोलन से जुड़े लोग, लोक के साथ अपने विमर्श को भी तथा लोक-आंदोलन को भी विस्तार देने के काम से तुरंत नहीं जुड़ेंगे, तो जनता में एक ऐसा भाव आयेगा कि अब उनकी कोई भूमिका नहीं है।

लोक-स्वराज्य में तो लोक की निरंतर भूमिका बनी ही रहती है। लोकतंत्र में भी लोक की निरंतर भूमिका बनाये रखने की जिम्मेदारी लोक-आंदोलनों की होती है।

जो चुनाव में आते हैं वे जानते हैं कि वोट देने के बाद, जनता क्या करे, इसका जवाब उनके पास नहीं होता है। जनता क्या करे, इसका जवाब उनके पास ही है, जो लोक-आंदोलन से जुड़े हैं, वैकल्पिक रचना के काम से जुड़े हैं तथा राष्ट्र-निर्माण के काम से जुड़े हैं।

पहला कदम, इस चुनाव के पहले से भी तथा इस चुनाव के दौरान भी जो लोक-संकल्प प्रकट हुआ है, उसे व्यवस्थित स्वरूप दें। लोगों के बीच पुनः जायें तथा लोक-संकल्प के एक चार्टर पर लोगों की पनुः सहमति लें। लोक संकल्प के चार्टर के निर्माण की प्रक्रिया तथा लोक से सहमति लेने की प्रक्रिया—ये दोनों लोक की सक्रिय भागीदारी से होना चाहिए।

जैसे-जैसे लोक संकल्प का चार्टर मूर्त रूप लेता जायेगा तथा लोगों की सक्रिय भागीदारी बढ़ती जायेगी वैसे-वैसे लोक संगठन का निर्माण तथा लोक संगठन की सक्रियता भी बढ़ती जायेगी। जनता अपने सक्रिय बने रहने का आधार तथा उसके लिए कार्यक्रम का निर्माण स्वतः करती जायेगी।

इस प्रक्रिया के गर्भ से आंदोलन एवं रचना दोनों के कार्यक्रम निकलते जायेंगे। लोक-आंदोलन को अहिंसक एवं लोकसत्तामुखी बनाने की तथा वैकल्पिक रचना खड़ा करने की जिम्मेदारी लोकसेवकों को उठानी होगी। स्वदेशी, शरीर-श्रम निष्ठा, ट्रस्टीशिप एवं ग्रामस्वराज्य के विचार के साथ इन लोक-आंदोलनों एवं वैकल्पिक रचना के कार्य को जोड़ने का कार्य लोकसेवकों को उठाना होगा। और इन सबका मूल आधार सत्य एवं अहिंसा को बनाना होगा।

जहां-जहां लोक-संगठन बनेंगे, उन क्षेत्रों में शुरुआत में ही तीन तरह के कामों को लेना होगा। पहला कार्य बहिष्कार से संबंधित होना चाहिए। पूंजीवादी कारपोरेट क्षेत्र द्वारा उत्पादित कम से कम किसी एक उत्पादन का उस क्षेत्र की जनता द्वारा पूर्ण बहिष्कार किया जाना चाहिए। क्षेत्र का कोई भी व्यक्ति उस वस्तु का उपभोग न करे। कोशिश यह भी हो कि वह वस्तु उस क्षेत्र में कहीं बिके भी नहीं। लोकस्वराज्य की दिशा में यह लोगों का पहला कदम होगा। इसकी सफलता से आगे का मार्ग अपने आप खुलता चला जायेगा।

दूसरा कार्य वैकल्पिक रचना से संबंधित होना चाहिए।

कम से कम एक वैकल्पिक रचना का कार्य उस क्षेत्र में ऐसा होना चाहिए, जो पूर्णतः स्थानीय लोक-शक्ति आधारित हो तथा स्थानीय स्रोतों पर आधारित हो। इससे स्वदेशी एवं लोक-श्रम की प्रतिष्ठा होगी तथा पूंजी के लोक-स्वामित्व एवं ट्रस्टीशिप की अवधारणा को मूर्तरूप देने का अवसर मिलेगा। सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि क्षेत्र में जिस वस्तु का बहिष्कार किया जा रहा है, उसका विकल्प इस वैकल्पिक रचना के माध्यम से आये।

तीसरा कार्य असहकार से संबंधित होना चाहिए। जन-विरोधी एवं अन्यायकारी किसी एक नीति का पूर्ण रूप से असहकार उस क्षेत्र में होना चाहिए। लोगों की असहकार करने की क्षमता ही सत्याग्रह को लोकशक्ति निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम के रूप में प्रकट करती है। असहकारमूलक सत्याग्रह न केवल राजसत्ता की निरंकुशता पर अंकुश लगाने का कार्य करती है, बल्कि लोकसत्ता के दायरे के निर्माण एवं विस्तार का भी कार्य करती जाती है।

क्षेत्रों में इन त्रिविध कार्यों को गति एवं शक्ति तभी मिल पायेगी, जब लोक संकल्प के चार्टर के आधार पर व्यापक लोकतांत्रिक आंदोलन भी खड़ा हो जाये। इसके लिए आवश्यक होगा कि देशभर की उन आंदोलनकारी शक्तियों के बीच समन्वय बने जो लोकसत्ता के निर्माण को प्राथमिकता देती हैं, चुनावी राजनीति से अलग हैं तथा लोक-आंदोलनों के माध्यम से लोकेषणा को प्रकट करती रहती हैं। राजनीति से अलग लोकनीति एवं लोकस्वराज्य के दायरे के विस्तार के लिए तथा उसे गहन बनाते जाने के लिए हमें तत्काल सक्रिय होना होगा। बिमल कुमार

इस युग में संघ में शक्ति निहित है और संघ निर्माण संस्थाओं को बनाकर ही किया जा सकता है।

× × ×

व्यक्तिगत कार्य की अपेक्षा संस्थागत कार्य अधिक इसलिए पसंद किया जाता है कि वह एक के बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे पुरुष के हाथ में गया तो निरंतर प्रगति करता जाता है।

–महात्मा गांधी

विचार-सौरभ

कसौटी पर गांधीजन

❑ राधा भट्ट

सर्वोदय जमात की यानी गांधीजनों की एक सिद्धांत सम्मत परंपरा रही है कि वे दलगत राजनीति से अलग रहे हैं। संसदीय लोकतंत्र उनका लक्ष्य नहीं रहा है। उनका विश्वास लोक संप्रभुता में रहा है। उस दृष्टि को लेकर डाइरेक्ट डेमोक्रेसी यानी ग्रामस्वराज्य और नगरस्वराज्य की स्थापना के लिए ही सदैव उनके अभिक्रम रहे हैं। इस दिशा में गांधीजी का और बाद में विनोबाजी और जे. पी. की संपूर्ण क्रांति का स्पष्ट विचार रहा है एवं उनके विशाल राष्ट्रव्यापी आंदोलन भी इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए रहे हैं।

गांधीजी ने सच्चे स्वराज के सामने संसद का महत्त्व नहीं दिया था। हिन्द स्वराज्य में व्यक्त उनके विचार इस प्रश्न पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। उन्होंने दलरहित राज्य-व्यवस्था का भी विचार दिया है। इसी से सर्वसम्मति निर्णय लेने की पद्धति निकलती है, जो विनोबाजी के ग्रामदान का मूलमंत्र है। ग्रामदान की बुनियाद है 'लोक स्वराज्य' और उसके लिए अनिवार्य आधार है 'लोक-स्वामित्व व सर्वसम्मति।'

गांधीजन की भूमिका में कार्यकर्ताओं ने समग्र समाज एवं समाज के चेतन अभिक्रम से होने वाली उनकी समग्र व्यवस्था लाने को अपना उद्देश्य माना है जबकि राजनीतिक दलों ने समाज को टुकड़ों में बांटकर और उन विभिन्न टुकड़ों के बीच प्रतिस्पर्द्धा पैदा करके होने वाले समाज के विकास को अपनी राह बनाया है। पार्टी की मूल धारणा ही पार्ट या टुकड़ों की है। दलों की प्रेरक शक्ति स्पर्द्धा या होड़ होती है जबकि समग्र की प्रेरणा प्रेम और एकता है। समाज के एक भाग के लिए काम करने वाली इकाई समग्र समाज का हित नहीं साधेगी, जबकि हमारा विश्वास और अनुभव है कि समग्र समाज का हित सधे, तभी एक समरस आत्म-निर्भर ही नहीं आत्म संतुष्ट अहिंसक समाज बन सकता है। गांधीजनों की सैद्धांतिक ही नहीं राजनीतिक भूमिका एवं राजनीतिक दलों की मूल अवधारणा में यह मूलभूत अंतर है।

राजनीतिक पार्टी चाहे अच्छी मजबूत हो या माध्यम हो, वह सत्ता पाने के लिए प्रतिस्पर्द्धा में उतरती है। उनकी समझ होती है कि सत्ता पाने से ही वे लोकहित कर पायेंगे। वास्तव में पार्टी बनते ही उनकी पूरी शक्ति उसे ही मजबूत बनाने में लगती है न कि आम लोगों को, लोकसमाज को मजबूत बनाने में, क्योंकि उन्हें दूसरी पार्टी की होड़ में खड़े होकर सत्ता हासिल करनी है। सत्ता पाना उनकी अनिवार्य प्राथमिकता है। वही पार्टी की शक्ति का मापदंड है न कि लोक-समाज की मजबूती। पार्टी की गति सत्ता-केन्द्र की ओर गतिमान रहती है। समाज के अलग-अलग टुकड़ों को वे इसी के लिए उपयोग में लाते रहते हैं। सत्ता का केन्द्रीकरण धीरे-धीरे समाज की लोकशक्ति को जकड़ कर क्षीण करता जाता है। इसी केन्द्रीकरण को हटाकर एक विकेन्द्रित अहिंसक समाज की रचना करना गांधी-विचार का मुख्य लक्ष्य है। जहां समाज एक है, दलों में बँटा नहीं है। जाति, संप्रदाय और स्त्री-पुरुष जैसे किसी भी प्रकार के टुकड़ों में बिखरा नहीं है। सबका मान उनके अपने मानव-व्यक्ति के रूप में है न कि किसी भेद व स्पर्द्धा की ताकत पर। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजनीतिक पार्टियां और गांधीजन दो विपरीत दिशाओं के यात्री हैं। तब गांधीजन किसी भी राजनीतिक पार्टी को किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं? वह संपूर्ण सहयोग न होकर कंडीशनल ही क्यों न हो? अपनी राह छोड़े बिना सहयोग देना संभव ही नहीं है, पूंजी व सत्ता के बल पर खड़ी रहने वाली पार्टी के साथ लोकशक्ति के साथ खड़े गांधीजन जो पूंजीवादी व्यवस्था और केन्द्रित राजसत्ता के विलय के पैरोकार हैं, कैसे हाथ मिला सकते हैं? ऐसा करने में उन्हें अपनी राह ही छोड़ देनी पड़ेगी।

सर्व सेवा संघ का संविधान 1947 में उस समय के वरिष्ठ गांधीजनों ने लिखा था। उसकी बुनियादी इकाई व आधारभूत सदस्यता लोकसेवक की है। उसकी निष्ठाओं में राजनीतिक दलों से लिप्त नहीं होना एक महत्त्वपूर्ण निष्ठा है। सर्व सेवा संघ के संविधान तथा लोकसेवक के निष्ठा-पत्र की पंक्ति इस प्रकार है—"...इस उद्देश्य की सिद्धि की दृष्टि से संघ राजसत्ता की प्राप्ति के लिए होने वाली प्रतिद्वंद्विता से सर्वथा निर्लिप्त रहेगा। वह ऐसे लोकतंत्र के विकास तथा स्थापना के लिए प्रयत्नशील होगा, जिसका आधार दलीय राजनीति नहीं बल्कि शासन-निरपेक्ष लोकनीति होगी।"

लोकनीति के लिए ऐसी स्पष्ट निष्ठा एवं दलगत राजनीति से दूरी बनाने का सुनिश्चित निर्णय उस काल में निर्धारित किया गया, जब आजादी के आंदोलन में गांधीजन राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के साथ ही कंधे से कंधा जोड़कर काम करते रहे थे। और उस दौर को गुजरे अधिक समय नहीं बीता था।

उनकी समझ की यह सूक्ष्म स्पष्टता आज हमारे लिए चिन्तनीय और पथ-प्रदर्शक है। जबकि आज तो राजनीतिक दलों में उस काल में विद्यमान देश व समाज के प्रति वैसी समर्पण भावना शेष नहीं रही है। नेतृत्व की वह गरिमापूर्ण ऊंचाई भी समाप्त हो गयी है, नीति व सिद्धांत भी दलगत राजनीति से लगभग गायब से ही हो गये हैं।

जीवन में हमारी निष्ठाओं की कसौटी के मौके आते हैं और हमारे सामने यह कसौटी देश में हो रहे चुनावों के निमित्त आयी है। विशेष रूप से इस समय आम आदमी पार्टी के अभ्युदय ने इस दिशा में सोचने को हमारे कई साथियों को प्रेरित किया है—'आप' ने राजनीतिक क्षेत्र में एक नयी संस्कृति खड़ी→

गांधीवादी संस्थाओं का विसर्जन नहीं, संवर्द्धन आवश्यक

❑ डॉ. रामजी सिंह

गांधी-विचार का आदर्श और उनकी संस्थाओं के प्रयोग एवं परम्पराएं इतनी उदात्त रही हैं कि उसका यदि कहीं क्षरण होता है तो आत्मा को विचलित होना स्वाभाविक है।

लेकिन आज जब गांधी-विचार एवं समाधान अपने एवं समाज-जीवन के लिए ही नहीं बल्कि वैश्विक व्यवस्था के लिए पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो रहे हैं तो गांधीवादी संस्थाओं के विसर्जन की बात काल-विरुद्ध हो गयी है। इन संस्थाओं में क्षरण के कारण जो आन्तरिक आकुलता है वह इसकी आलोचना और आत्म निरीक्षण का प्रतीक है। काश! साहसपूर्वक अपनी कमियों को सार्वजनिक कर दिया जाता। अपने दोषों को प्रकाश में लाना एक नैतिक भैषज्य तो है ही, यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया भी है।

इन संस्थाओं के विसर्जन करने वालों के मन में चूंकि गांधी-विचार एवं आचार के लिए आन्तरिक अनुराग है, अतः वे क्षरण एवं इसके पतन को सहन नहीं कर सकते। अतः विकल होकर इसके विसर्जन की बात कहते हैं और इसके पक्ष में बापू द्वारा गांधी सेवा संघ के विसर्जन की घोषणा तथा संत विनोबा द्वारा बिहार सर्वोदय मंडल को भी विसर्जित करने का एक उदाहरण देने के लिए तंत्र-मुक्ति एवं निधि-मुक्ति के सूत्र उपस्थित करते हैं। लेकिन तंत्र-मुक्ति का अर्थ न तो संगठन-मुक्ति है और निधि-मुक्ति का माने अर्थ-मुक्ति मानना चाहिए। इसका भावार्थ है कि हमारा संगठन ऐसा हो जिसमें कम से कम तंत्र, कम से कम बाह्य अनुशासन हो। संगठन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हिंसा का प्रवेश हो ही जाता है। इसीलिए बापू ने कहा था—"संगठन अहिंसा की कसौटी है।" जहां आत्मानुशासन रहेगा वहां बाह्य-तंत्र या दंड-विधान की जरूरत नहीं होगी या अपवाद स्वरूप ही होगी।

संगठन मात्र संगठन के लिए नहीं होना चाहिए। संगठन का उद्देश्य या लक्ष्य समाज हित है। अतः व्यक्तिगत स्वार्थ-सिद्धि, या लाभ या पद कीर्ति की अपेक्षा जब आ जाती है तभी गुटों का निर्माण होता है जो अन्तर्कलह के मूल कारण होते हैं। अतः कलह-शमन एक स्थायी और अनिवार्य उपकरण है। इसका यह अर्थ नहीं हो सकता है कि कोई सामान्य अनुशासन या संस्था संचालन के आवश्यक नियम-परिनियम या प्रावधान न हों। तब तो अराजकता आयेगी या व्यक्तिगत स्वेच्छाचारिता बढ़ेगी। अनुशासनहीनता अहिंसा नहीं हो सकता बल्कि अनुशासनहीनता सबसे खतरनाक हिंसा है। अतः संस्था के नियम-परिनियम या इसे केवल अस्त्र-शस्त्र की हिंसा से ही नहीं, वाक्-हिंसा या लेखन-हिंसा से बचना होगा। इस दृष्टि से मिथ्यारोप या अप्रमाणिक बातें कहना भी हिंसा का ही रूप मानना चाहिए। मृषावचन के अतिरिक्त परुष, पिशुन एवं संप्रलाप को भगवान बुद्ध ने त्याज्य माना है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि किसी के दोष या मिथ्याचार या भ्रष्टाचार को हम सहते जायें। अन्याय का प्रतिकार हमारा स्वधर्म है। कसाई की छूरी के सामने गाय को सिर देना अहिंसा नहीं उसकी विवशता है। अतः संस्थाओं का अनुशासन-भंग करना तो हिंसा है ही एवं अर्थ-शुचिता को भंग करना भी अपराध है, अतः यह हिंसा का प्रकट रूप है।

संस्थाओं में जितनी ही अधिक पारदर्शिता होगी, उतना ही कम संशय एवं अविश्वास उत्पन्न होगा। मात्र दो माह में अनौपचारिक संगोष्ठी हो जाए ताकि खुलकर चर्चाओं में उसे सुलझा लिये जाएं। गांठें खुलने से मन हल्का होता है। किसी के खिलाफ हस्ताक्षर अभियान, या उसके खिलाफ पर्चे वितरण या अखबारों में विज्ञापन आदि तो संस्था के प्रस्ताव से पारित प्रस्ताव से सदा-सर्वदा वर्जित होने ही चाहिए। ये बातें उपदेश एवं ऊंचे सिद्धान्त की नहीं, न्यूनतम प्रबन्धन की दृष्टि से हैं।

इसी प्रकार संस्थाएं अपनी नियमावली या परम्परा निर्माण कर किसी पद एक या दो सत्र से अधिक नहीं बने रहने का नियम बना ले। एक जगह बहुत दिनों तक रहने से निहित-स्वार्थ तो हो ही जाता है, दूसरे साथियों को अवसर नहीं मिलता, न उनका लाभ मिल पाता। वंशवाद से भी बचना चाहिए। कई जगह संस्था की सम्पति को और इसके पदाधिकरियों को वंशवाद से आक्रांत पाते हैं। ❑

→करने की कोशिश की है। नये आयामों को आचरण में लाने का प्रयास भी किया है, किन्तु गहराई से सोचें तो वह एक पार्टी ही है यानी 'पार्ट' होने के वे सारे लक्षण उसमें हैं जो अन्य राजनीतिक पार्टियों में है। और वह भी एक केन्द्रित सत्ता को प्राप्त करके उसके द्वारा शासन चलाने पर विश्वास करती है। उसके लिए समाज को टुकड़ों में बाँटना और उनके बीच प्रतिद्वंद्विता पैदा करना, यह उसकी भी कार्य-पद्धति है। इस प्रकार की प्रचार-प्रक्रिया में बेतहाशा धन व्यय करने के अतिरिक्त उनके पास कोई दूसरी रीति-नीति नहीं है। गांधीजन जैसी एक जमात को स्पष्टतः इन पार्टियों से ऊपर अपना स्थान बनाए रखना आवश्यक हो जाता है। यह जमात एक तीसरी शक्ति बनने का प्रयास करे जो सत्ताधारी व विरोधी पार्टियों से अलग रहकर इनके ऊपर अपनी चिन्तनपूर्ण नजर रख सके। उनकी जन-विरोधी नीतियों या कार्यवाहियों का प्रतिकार कर सके और यह भी सही है कि उनके अच्छे कदमों की सराहना भी करे। अपनी इस भूमिका को निभाने के लिए उन्हें किसी भी राजनीतिक पार्टी को किसी प्रकार की सहायता देने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। यही है हमारी कसौटी का समय जिसमें हमें चिन्तन व समझ की स्पष्टता के साथ निर्णय लेने होंगे। ❑

धरोहर

विदेशी कविता का हिन्दी शीर्षक क्यों?

❑ बद्रीनारायण तिवारी

भारत छोड़ो आन्दोलन, 1942 की चर्चा होते ही गोवालिया टैंक मैदान (अब अगस्त क्रान्ति मैदान) से जो स्वाधीनता का उद्घोष हुआ। उसे महात्मा गांधी ने 8 अगस्त, 1942 को जो ऐतिहासिक भाषण दिया वह सर्वप्रथम हिन्दी में आरम्भ किया किन्तु सम्मेलन में अहिन्दी भाषी जनता की उपस्थिति देख कर अंग्रेजी में बोले थे। इसके अंग्रेजी अनुवाद में ''करेंगे या मरेंगे'' का स्वाभाविक रूप से ''डू ऑर काई'' हुआ। तत्पश्चात् जब इसका अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद हुआ उसमें यह ''करो या मरो'' हो गया जो अभी तक यही नारा जन-चर्चा में प्रचलित है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि गांधीजी ने अपने भाषण में ''करो या मरो'' न कह कर ''करेंगे या मरेंगे'' का ही प्रयोग किया था।

9 अगस्त, 1942 को प्रातः 5 बजे अपनी गिरफ्तारी के पूर्व देश के नाम संदेश के नीचे गांधीजी ने स्वयं हिन्दी में लिखा था—''करेंगे या मरेंगे।''

महात्मा गांधी ने इस नारे की कितनी सुन्दर हृदय स्पर्शी विवेचना की उसे पढ़कर स्वयं अनुभव करेंगे। उनके शब्दों में—'यह एक छोटा-सा मंत्र देता हूं। आप इसे अपने हृदय-पटल पर अंकित कर लीजिए और हर श्वांस के साथ उसका जाप किया कीजिए। यह मंत्र है, ''करेंगे या मरेंगे'' या तो हम भारत को आजाद करेंगे या आजादी की कोशिश में प्राण दे देंगे।' कुछ लोगों की यह सहज प्रतिक्रिया हो सकती है कि ''करो या मरो'' और ''करेंगे या मरेंगे'' एक ही बात है। लेकिन वास्तव में इन दोनों में एक पूरी विश्व दृष्टि का फर्क है। उसे स्पष्ट करने के लिए उद्धृत पंक्ति बदल कर देखें शायद समझ में आये। या तो भारत को आजाद करो या आजादी की कोशिश में प्राण दे दो। जहां ''करेंगे या मरेंगे'' एक आत्मीय आह्वान है, वहीं ''करो या मरो'' में एक अधिनायक का आदेश, ''करेंगे या मरेंगे'' में गांधी स्वयं शामिल हैं। यह व्यक्तिगत प्रण है, एक सुन्दर विश्वास जो सामूहिक मुक्ति की कामना का स्वप्न गढ़ता है। सबका अपना स्वप्न।

इस समय देश में तथाकथित जन आन्दोलनों की बाढ़ आयी लगती है और गांधी बन जाने की व्यग्रता विभिन्न विकृतियों के साथ स्पष्ट परिलक्षित हो रही है। इसी संदर्भ में महात्मा गांधी के इन शब्दों में उसका यथार्थ चित्रण है—''मुझे उन लोगों का नेता या सेना की भाषा में कहें, तो सेनापति कहा जाता है, लेकिन मैं अपनी स्थिति को उस नजर से नहीं देखता। किसी पर हुक्म चलाने के लिए मेरे पास प्रेम के अलावा और कोई अस्त्र नहीं है। आप उसमें मेरा हाथ केवल तभी बंटा सकते हैं जब मैं आपके सामने आपके सेनापति के रूप में नहीं बल्कि एक विनम्र सेवक के रूप में आऊं और जो सबसे अच्छी सेवा करता है वही बराबर की हैसियत वालों में प्रमुख हो जाता है।''

महात्मा गांधी के वक्तव्य में कितनी स्पष्टता से अपने को सेनापति नहीं बल्कि एक सेवक के रूप में वकालत की गयी हो, उसके बारे में ''करो या मरो'' जैसे सेनापतिनुमा आदेशात्मक अभिव्यक्ति स्वीकार कर लेना विकृत मानसिकता का प्रतीक है। उस आन्दोलन के प्रति गांधीजी के प्रयासों को नकारना ही माना जायेगा। वर्तमान समय में यह प्रयास जन-आन्दोलन के साथ ही ''क्रान्तिकारी'' का कार्यक्रम और ''सत्याग्रह'' प्रारम्भ होने से पूर्व ही अपने को महिमा मण्डित स्थापित करने के प्रयासरत् हो जाते हैं। इस प्रकार इस बांझ व्यग्रता का अर्थ जनता भी समझने लगी है जैसा कि अभी निर्वाचन के पूर्व एक नवनिर्मित संस्था के कार्यों से समझने में देर नहीं लगी है। किन्तु इससे एक खतरा है ''जीत की हार'' का है।

इसी प्रसंग में एक रोचक और प्रेरक घटना का उल्लेख न करने से यह चर्चा अपूर्ण ही रहती। भारत छोड़ो आन्दोलन के प्रारम्भ होने के दस दिनों के अन्दर ही 19 अगस्त, 1942 को अमेरिका में प्रसिद्ध अफ्रीकी-अमेरिकी कवि ''काउंटी कलेन'' की एक अंग्रेजी की कविता प्रकाशित हुई थी। इस ऐतिहासिक अंग्रेजी कविता का शीर्षक गांधीजी के हिन्दी शब्दों को ज्यों का त्यों रखा—''करेंगे या मरेंगे'' अंग्रेजी में जब कि हमारे देश के स्वनामधन्य विद्वान अनुवादक और इतिहासकार ''करो या मरो'' यानी ''डू ऑर डाई'' क्यों लिखने लगे? उस अंग्रेजी कविता का हिन्दी अनुवाद किया श्री राजेश कुमार झा ने जो ''जनसत्ता'' में ''करेंगे या मरेंगे'' शीर्षक प्रकाशित भी हुआ—

करेंगे या मरेंगे

–काउंटी कलेन

देता है कौन वाणी को उदात्तता और
शब्दों की महानता।
कौन मढ़ता है आभामंडल शब्दों के चारो ओर?
कैसे बन जाती है कोई पुकार जादुई छड़ी,
खोल देती है बंद दरवाजों को।
कैसे वही शब्द मान लिये जाते हैं अनर्गल
बस इसलिए कि गूंज रहे होते हैं,
वे कहीं और कर्कश
शायद बोलने चलने की त्वचा के रंग और?
आंखों, होंठ या एशियाई सांसों की महक
का है फर्क,
वरना क्यों जाती कहीं, ''करेंगे या मरेंगे''
नीची, ओछी
पश्चिम में गूंजे मुक्ति के उद्घोष
''आजादी दो या मौत'' से? →

❑ *''मानस संगम'', महाराज प्रयाग नारायण, शिवाला, कानपुर-208001 (उत्तर प्रदेश)*

टिहरी बांध : उजड़े पर गिनती में नहीं

❑ विमल भाई

टिहरी बांध से विस्थापितों की दुर्दशा तो है ही पर जरा टिहरी बांध की झील के पास की स्थिति की बानगी भी देख लें। भिलंगना नदी में जहां टिहरी की झील 25 किलोमीटर तक अंदर गयी है, वहां नंदगांव में 865 मीटर के पास रहने वाले 20 परिवारों की खेती झील में समा गयी है, घरों में दरारें आयी हैं। लोग धरने करते जा रहे हैं। सरकार सुनती नहीं।

झील के किनारे के लगभग 80 के करीब गांवों की जमीनें धसक-सरक रही हैं। हर बरसात में झील का पानी बढ़ता है और गर्मी में जब पानी नीचे उतरता है तो यह धसकना-सरकना शुरू हो जाता है। मदन नेगी सहित कितने ही गांवों के मकान खतम हो गये या होने के कगार पर हैं। राज्य व केन्द्र सरकारें झील के किनारे रहने वालों के लिए अलग नीति की बात करती रही हैं। सर्वोच्च अदालत के दबाव पर ही एक नयी नीति बनायी गयी है।

झील के कारण सामाजिक ताना-बाना टूटा है। सुख-दुख में लोग साथ नहीं हो पा रहे हैं। 9 वर्षों में भागीरथीगंगा में टिहरीबांध झील प्रभावित क्षेत्र में महज एक रिश्ता हुआ।

बात थोड़ी पुरानी है पर यह घटित होती ही रहती है। 14 दिसंबर, 2012 को एक बारात, जिसमें लगभग 150 लोग थे, नयी टिहरी के बौराड़ी से रौकोट वापिस जानी थी। किंतु झील पार करने के लिए बोट उपलब्ध नहीं थी जबकि पहले बात की गयी थी। शाम 4 बजे से रात 11 बजे तक ठंड में बैठना पड़ा। उच्चाधिकारियों से संपर्क करने के बाद रात को 11 बजे लोग झील पार कर पाए। 5 बच्चों की तबीयत भी खराब हुई।

भागीरथी व भिलंगना में 10 पुल डूबे हैं। भागीरथी में छामबाजार के झूला पुल व भिलंगना में घोंटीबाजार के झूला पुल से 30-30 गांव का सम्पर्क था। भल्डियाणागांव वाले पुल से बस जाती थी, अब नये पुल से मात्र जीप जा सकती है किंतु उसके रास्ते नहीं बने हैं। इसलिए यातायात नहीं हो पाता है। पीपलडाली के पुल से भी मात्र जीप जाती है। अन्य 3 मोटरपुल अभी योजना स्तर पर हैं।

बांध की झील में पर्यटन की योजनाओं के अंबार लग गए हैं, पर्यटन मेले-कार्यक्रम भी हो गए पर कोई योजना अभी तक नहीं पहुंची है। दूसरी तरफ झील तक पहुंचने के संपर्क मार्ग हैं ही नहीं। ढलानों के विकट रास्तों के कारण मुश्किल से लोग बोट तक पहुंचते हैं। उदाहरण के लिए ओणम से 3 किमी, मल्ला से 2 किमी, बैलगांव से 3 किमी, कई गांवों से 1-2 किमी. झील दूर है। कुमराडा, बलडोगी, खामली, मजीर, मडगांव आदि में रास्ते नहीं हैं। झील का जलस्तर घटता है तो समस्या और भी विकट हो जाती है। फिसलने का खतरा हमेशा बना रहता है। बीस से ज्यादा लोग व 70 से ज्यादा पशु मारे गए हैं।

2005 से केन्द्रीय जल आयोग की कोई रिपोर्ट नहीं आयी जो बताती कि टिहरी बांध झील की जल गुणवत्ता क्या है? हर बरसात में मृत जानवर, लावारिस लाशें, कचरा आता है। इसे हटाने के लिए कोई योजना नहीं है। 7 वर्षों में कोई सफाई नहीं हुई है। किनारे रहने वालों और नयी टिहरी जहां झील से ही पीने का पानी की आपूर्ति होती है वहां पर पाचन, गैस व यूरिक एसिड की शिकायतें बढ़ी हैं। इन क्षेत्रों में 80 प्रतिशत जलापूर्ति हैंडपम्प से होती है।

नयी टिहरी में अभी लोग टिन शेडों में पड़े हैं। विस्थापितों के प्लाटों पर कब्जे हैं। नयी टिहरी बार एसोशियसन के अनुसार टिहरी देहरादून को मिलाकर 100 से ज्यादा फ्लैटों पर बांध कंपनी टीएचडीसी का कब्जा है। पुरानी सुविधाओं के स्थान पर विस्थापितों को नये शहर में सब वैसा ही मिलना चाहिए था। उसके लिए विस्थापितों का नागरिक मंच कितने ही धरने-प्रर्दशन-भूख हड़तालें कर चुका। पर समस्याएं जस की तस बनी हुई हैं। समाधान भी सब सरकारें करने को कहती हैं पर करती कोई नहीं हैं।

प्रश्न यह है कि जब टिहरी बांध में लगे हर कण के बारे में योजना थी, हर कर्मचारी के भत्ते व परिवार के रहने तक की योजना व पैसे का इंतजाम था और समय-समय पर उसके लिए व्यवस्थित रूप से सोच और क्रियान्वित भी किया जाता है तो पुनर्वास की समस्याओं का अध्ययन क्यों नहीं किया गया। उसके लिए पूरे पैसे का इंतजाम क्यों नहीं किया गया। बांध विरोधी आंदोलन ने सरकार को योजना बनाने से नहीं रोका था। आंदोलन के बावजूद बांध संबंधी योजनाएं गई, सम्वत् को ईसवी खा गई, धर्मशाला को होटल खा गया, रामलीला को सिनेमा खा गया, सेर को किलो खा गया, मन को क्विंटल खा गया, गुरुकुल को कान्वेंट खा गया, पिता और माता को पापा-मम्मी खा गये, भोज को पार्टी और प्रणाम को टाटा खा गया। ❑

→ *अपनी गुलाम धरती की तरह वंचित रूखी*
क्या भारत की आवाज हो चुकी है,
इतनी दुर्बल, अर्थहीन, अभद्र।
कि दावा करते हैं आजादी के लिए
लड़ने का जो,
अनमने से सुन रहे हैं युद्ध के इस आह्वान को
वहीं शब्द, जिन्हें सुनकर अंग्रेजी जुबान में।
उठा लिये थे हथियार दृढ़ निश्चय से/उन्होंने कभी।

(अमेरिका में प्रकाशित)

19 अगस्त, 1942 इसी वर्तमान विद्रूपता के विषय में भी हरिमोहन झा के शब्दों में व्यक्त हुआ। अजी! संस्कृत को अंग्रेजी खा

तो बनती ही रहीं और अब सरकारें पैसे का रोना रोकर काम नहीं करना चाहती हैं। यदि समाधान हो जायेगा तो मगरमच्छी आंसू बहाकर वोट कैसे बटोरे जायेंगे। टिहरी बांध मात्र एक उदाहरण है राज्य व देश के सभी चालू बांधों की स्थिति ऐसी ही है।

उत्तराखंड में बांध बनाने के लिए हल्ला मचाने वाला कोई इन बातों की चिन्ता नहीं करता न बोलता है। नये बांधों के लिए देहरादून में कई धरने-जलसे आयोजित किये गये। विश्वबैंक पोषित करोड़ों की सरकारी परियोजनाओं को चलाने वाले एनजीओ के मालिक ने राज्य के रुके बांध चालू न होने की स्थिति में अपना पद्मविभूषण वापिस करने की घोषणा भी कई बार की। यूं वापिस नहीं किया।

जो लोग सिर्फ बांध बनाओ की माला जपते रहते हैं वे इस ओर ध्यान क्यों नहीं दे पाते कि चालू बांधों की स्थिति क्या है। विस्थापितों का पुनर्वास क्यों नहीं हो पाया? पर्यावरण का कितना नुकसान हुआ, भरपाई हुई या नहीं? जल संग्रहण क्षेत्र का उपचार हुआ या नहीं? क्या बांध उतनी बिजली भी पैदा कर रहे हैं जितने का दावा था? किसी बांध की कोई निगरानी नहीं। विकास का जो दावा किया जाता है क्या वह पूरा भी हुआ है।

बांध से विकास का लाभ किसको मिला है? स्थायी रोजगार कितना मिला और आजीविका के स्थायी साधन कितने खतम हुए? ऐसी लंबी सूची है। जिस तरफ बांध समर्थकों का कोई ध्यान नहीं है चूंकि इन सबके स्वार्थ उन बांध कंपनियों और विश्वबैंक, एशियाई विकास बैंक जैसे बांध के लिए धन देने वाली संस्थाओं के साथ जुड़े हैं। जिनको न विस्थापितों, न पर्यावरण और न ही इस बात से मतलब है कि बस ऊर्जा प्रदेश का हल्ला मचाते रहो। नये बांधों से पहले पुराने बांधों की स्थिति को भी तो जान लिया जाय। उनके लिए कुछ कर दीजिए साहब।

(इंडिया वाटर पोर्टल, हिन्दी)

स्वच्छता और पवित्रता

❑ **महावीर त्यागी**

स्वच्छता के बिना पवित्रता नहीं और पवित्रता के बिना स्वच्छता अधूरी है। पवित्रता में आध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं। पवित्रता श्रद्धा का प्रश्न है। स्वच्छता से बाहरी सफाई की झलक इंगित होती है, जबकि पवित्रता से मन, हृदय, आत्मा, अंतःकरण की शुद्धता का बोध होता है। स्वच्छता और पवित्रता सुनने से ऐसा लगता है जैसे स्वच्छता के बिना पवित्रता और पवित्रता के बिना स्वच्छता का अस्तित्व नहीं है। ये दोनों एक सिक्के के दो पहलुओं की तरह हैं, जैसे उन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता, वैसे ही ये दोनों शब्द और क्रियाएं आपस में एक-दूसरे के पूरक हैं। अपनी बात और स्पष्ट करने के लिए मैं उदाहरण दे रहा हूं, गंगाजल पवित्र है परन्तु वह स्वच्छ है या नहीं यह जांच का विषय हो सकता है। हर पूजा में और किसी भी देव-स्थल पर चढ़ाया गया प्रसाद पवित्र है परन्तु वह कितना स्वच्छ है यह प्रश्न भिन्न है। सफाई पर किसी ने एक शेर लिखा है, जो इस प्रकार है :

''किसी का मकूला ये क्या खूब है,
सफाई खुदा को भी मरगूब है।''

('मकूला' का मायने होता है 'कहावत' और 'मरगूब' का 'प्यारी'।)

हम सफाई या स्वच्छता को दो भागों में बांट कर देखें तो उसका सही दर्शन कर सकते हैं। या यूं कहें कि उसे सही रूप में समझ सकते हैं। बिना पूर्णता के सफाई को पूरी तरह समझना संभव नहीं है। यूँ तो हर विषय को सांगोपांग देखकर और समझकर ही उसके बारे में कुछ कहना उचित और न्यायपूर्ण माना जा सकता है। सफाई ऐसा विषय है जो सदैव उपेक्षित रहा है। अब चर्चाओं में स्थान तो मिला है, परंतु क्रियात्मक दृष्टि से बहुत पीछे, बहुत नीचा, हल्का और हाथ से न करने जैसा कार्य माना जाता है। इन पंक्तियों पर ध्यान दीजिए, ''पर उपदेश कुशल बहुतेरे, करे आचरण सो नर ना घनेरे।'' ये पंक्तियां सफाई विषय पर पूरी तरह चरितार्थ होती हैं। सफाई सब चाहते हैं, सबको प्यारी, अच्छी और आवश्यक लगती है परंतु मुझे न करनी पड़े, कोई दूसरा उसे करे और उसका लाभ मुझे मिले, ऐसी मनःस्थिति सफाई के बारे में बनी हुई है। सामाजिक विडंबना देखिए, जो गंदगी करे वह ब्राह्मण या उच्च वर्गीय और जो सफाई करे और समाज को स्वच्छता प्रदान कराये वह अछूत, नीचा, दलित या महतर, जबकि सफाई करने वाला ब्राह्मण और गंदगी करने वाला अछूत और महतर माना जाना चाहिए।

यहां संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा कराये गये एक सर्वे का जिक्र करना प्रासंगिक है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार विश्व की सात अरब जनसंख्या में से करीब छः अरब के पास मोबाइल फोन हैं। परंतु साढ़े चार अरब आबादी के पास किसी भी प्रकार का शौचालय नहीं है। यह स्थिति तब है जब कि विश्व निकाय शौचालय बनवाने में पूरी तरह जुटा है। लोगों को शौचालय बनवाने के लिए तकनीकी और आर्थिक सहायता दे रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ के उपमहासचिव जान एलियासन इसे संसार की खामोश त्रासदी बता रहे हैं। यह संसार में गरीबी और घोर असमानता को इंगित करता है। उन्होंने तय किया है कि 2015 तक वंचित लोगों की संख्या का 50 प्रतिशत तक कम करना है। संसार के अन्य विकासशील राष्ट्रों में भारत एक ऐसा देश है जहां यह समस्या बहुत विकराल रूप धारण किये हुए हैं। यहां की ग्रामीण जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग अभी भी शौचालयों को अनावश्यक समझता है और खुले में मल-त्याग की वकालत करता है। शौचालयों से संबंधित चर्चा अगले लेख में करेंगे।

सफाई के दो भाग : मैं सफाई के दो भाग करता हूं—अंतःकरण की सफाई और बाह्य सफाई, व्यक्तिगत सफाई और सामूहिक सफाई। सर्वप्रथम हम अंतर और

बाह्य सफाई की चर्चा करते हैं। अंतःकरण की स्वच्छता और बाहरी स्वच्छता एक सिक्के के दो पहलुओं जैसे हैं। जैसे उन्हें एक-दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता, इसी प्रकार अंतरबाह्य सफाई भी एक-दूसरे से पूरी तरह जुड़ी है। एक के अभाव में दूसरी टिक नहीं सकती। अंतर सफाई को हम प्रार्थना से आरंभ करते हैं। अलग-अलग धर्मों को मानने वाले अलग-अलग समय और पद्धति से प्रार्थना करते हैं। जैसे हिन्दू अकसर प्रातः और सायं प्रार्थना करते हैं। कुछ लोग माला लेकर करते हैं कि हर श्वांस के साथ अपने अकीदे के अनुसार राम, खुदा या वाहेगुरु का नाम निकलना चाहिए। आर्यसमाजी लोग यज्ञ, हवन करके पूजा करते हैं, कुछ लोग राधास्वामी मत को मानते हैं। कुछ लोग निरंकारी मिशन से जुड़े हैं, कुछ लोग सच्चा सौदा की विचारधारा से जुड़े हैं। हमारे देश में हजारों साधु-संत और साध्वी अंतरात्मा को शुद्ध और पवित्र कराने में जुटे हैं। इस्लाम धर्म में पांच समय नमाज़ अदा करने का विधान है। गुरुद्वारों में सिख समुदाय के लोग घंटों-घंटों पाठ और कीर्तन करते हैं। ईसाई लोग प्रत्येक रविवार को गिरजाघर में इकट्ठे होकर प्रार्थना करते हैं। चित्त-शुद्धि के लिए लोग सतसंग करते और कराते हैं। व्रत और रोजे रखते हैं। तीर्थों की यात्रा करते हैं। वेद-पुराण, गीता और रामायण आदि का पाठ करते और कराते हैं। मुस्लिम कुरान से अच्छी शिक्षा लेते और दिलाते हैं। ईसाई धर्म को मानने वाले बाइबल पढ़कर चित्त शुद्धि का नेक कार्य करते हैं। सिख लोग गुरुग्रंथ की शिक्षाओं को जीवन में धारण कर अपने को पवित्र बनाते हैं। इतना ही नहीं सभी धर्मों को मानने वाले किसी न किसी रूप में पूजा अर्चनाकर अपने को पवित्र बनाने में लगे हैं। हर धर्म में कुछ ऐसी कथा-कहानी प्रचलित हैं जो मनुष्यों को आदर्श की ओर आगे बढ़ाने में सहायक होती हैं। सभी धर्मों में मनुष्यों को अनेकानेक तरीकों से पवित्र बनाने की शिक्षा दी जाती है। प्रार्थना व पूजा से पहले लोग स्नान करते हैं। कुछ वजू करते हैं, कुछ वस्त्र उतार कर और कुछ स्वच्छ वस्त्र पहनकर पूजा अर्चना करते हैं। इतना ही नहीं जिस स्थान पर पूजा की जाती है उसे साफ करते हैं, वहां धूप-अगरबत्ती जलाकर सुगंधित वातावरण बनाते हैं। अंतःकरण शुद्धि हेतु मनुष्य अधिक उपाय करते हैं।

बाह्य सफाई : मनुष्य जिस स्थान और परिवेश में रहता है उसे किसी न किसी रूप में साफ अवश्य करता है। सफाई की शिक्षा मनुष्य मां, बाप, घर-परिवार, पड़ोस और समाज से प्राप्त करता है। शिक्षा का बहुत बड़ा प्रभाव साफ-सफाई के क्षेत्र में पड़ रहा है। मनुष्य और समाज जितना अधिक शिक्षित होता जा रहा है उतना ही सफाई के प्रति जागृत होता जा रहा है। वह अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सफाई के नियमों का पालन करता है। मनुष्य सफाई में वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी अपनाता जा रहा है। क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि में सफाई के मापदंड तय होने लगे हैं। संसार बहुत तेजी से एक-दूसरे के समीप आ रहा है। ऐसे में मनुष्य के रहन-सहन का प्रभाव उसके परिवार, पड़ोस और गांव तक ही सीमित न रहकर वह क्षेत्र, देश और दुनिया तक असर करता है। बाह्य सफाई का प्रभाव जितना मनुष्य पर पड़ता है उतना ही घर, पड़ोस और गांव पर भी पड़ता है और किसी न किसी रूप में देश और दुनिया पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। बाह्य सफाई के प्रति अधिक जागरूक होना हर दृष्टि से आवश्यक है। इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि अंतर-सफाई का प्रभाव समाज, देश और दुनिया पर नहीं पड़ता, वह भी अवश्य पड़ता है। अतः मनुष्य को मन, वचन और कर्म की पवित्रता और स्वच्छता का सदैव ध्यान रखना चाहिए, तभी मनुष्य जाति सुख-शांति से रह सकती है।

व्यक्तिगत सफाई : अंतर शुद्धि के साथ-साथ मनुष्य शारीरिक स्वच्छता का भी ध्यान रखता ही है। प्रातः जगने के साथ ही उसकी सफाई की दिनचर्या प्रारंभ होती है। शौच के पश्चात राख, मिट्टी, साबुन से हाथ साफ करके दांत सफाई, मंजन और पेस्ट से करता है। मनुष्य सफाई के पश्चात अपनी दिनचर्या प्रार्थना से शुरू करता है। अपने बिस्तर को व्यवस्थित करने के बाद वह कमरे और घर-आँगन को बुहारता है, पोछा लगाता है। पोछे के पानी में फिनायल डालकर भी फर्श को स्वच्छ बनाता है परंतु घर का कूड़ा बाहर गली में फेंक देता है। घर के बाहर गंदगी करने में जरा भी संकोच नहीं करता।

सामूहिक सफाई : व्यक्तिगत सफाई तो हम अपने ज्ञान और साधनों की उपलब्धता के अनुसार कमोबेस करते ही हैं। परंतु सामूहिक और सामाजिक मामलों में तो हम बहुत पीछे हैं। कहीं भी कूड़ा-कचरा फेंक देते हैं, कहीं पर भी थूक देते हैं। इतना ही नहीं कहीं पर भी पेशाब और मल-त्याग कर देते हैं। गांवों में घरों का गंदा पानी गली में बहा देते हैं और रास्तों में कीचड़ पैदा कर देते हैं। यह सब देखकर प्रोफेसर एन. आर. मलकानी को एक पुस्तक लिखनी पड़ी, 'स्वच्छ लोग और अस्वच्छ देश''(Clean People and unclean Country)। ❑

करनाल सर्वोदय मंडल : युवा शिविर

संजयनगर जिला करनाल में 13, 14 व 15 फरवरी, 2014 को तीन दिवसीय युवा शिविर का आयोजन किया गया। नेहरू युवा केन्द्र, करनाल ने आर्थिक मदद देकर कार्यक्रम को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। शिविर में नौजवानों को राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की क्या भूमिका हो सकती है, विषय पर वक्ताओं ने विचार रखे। वक्ताओं में हरियाणा प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री महावीर त्यागी, केनरा बैंक के मैनेजर श्री नरेश सैनी, लैक्चरर, बरसत नगर, कुमारी कविता, एम. एस. डब्ल्यू रहे। शिविर का संचालन जिला सर्वोदय मंडल के श्री मुस्लिम चौहान ने किया। अंतिम दिन नेहरू युवा केन्द्र के को-डीनेटर ने संबोधित किया। **–महावीर त्यागी**

सर्व सेवा संघ की नयी कार्यकारिणी समिति गठित

सर्व सेवा संघ (अ.भा.सर्वोदय मंडल) की कार्यकारिणी समिति की बैठक 3 एवं 4 मई, 2014 को हैदराबाद में संपन्न हुई। **अध्यक्ष श्री महादेव विद्रोही** ने निम्न पदाधिकारियों, मनोनीत सदस्यों, समितियों के संयोजकों, सदस्यों एवं आमंत्रितों की घोषणा की—

पदाधिकारी

महामंत्री : शेख मोहम्मद हुसेन, वित्त एवं प्रशासन

मंत्री :1. विजय कुमार, संगठन
2. शोभा शिराढोणकर, महिला संपर्क
3. जीवीवीएसडीएस प्रसाद, युवा सम्पर्क

अध्यक्ष द्वारा मनोनीत सदस्य

1. भवानी शंकर कुसुम
2. एम.पी.मताई
3. विजय कुमार
4. शोभा शिराढोणकर
5. आदित्य पटनायक
6. जी. वी. वी.एस. डी. एस. प्रसाद
7. रवीन्द्र सिंह चौहान
8. रमेशचन्द शर्मा
9. विजय दीवान
10. अश्वथ नारायण

समितियों के संयोजक

खादी समिति	: जयवंत मठकर
प्रकाशन समिति	: अशोक भारत
अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क	: डॉ.एम.पी.मताई
शांति सेना समिति	: चन्दन पाल
राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना समिति	: रमेशचन्द शर्मा
राजघाट परिसर	: शिव विजय सिंह
भूदान-ग्रामदान	: गौरांग महापात्र

पदेन सदस्य (प्रदेश सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष)

1. भीमकांत कोंवर	: असम
2. कल्पना अशोक	: बिहार
3. महावीर त्यागी	: हरियाणा
4. रामचन्द्र नायर	: केरल
5. सुरेन्द्र कौलगी	: कर्नाटक
6. आबा कांबले	: महाराष्ट्र
7. आशा बोथरा	: राजस्थान
8. नारायण दास	: उड़ीसा
9. के. एम. नटराजन	: तमिलनाडु
10. नारायण भाई	: पश्चिम बंगाल
11. सुरेश भाई	: उत्तराखंड
12. मधुसूदन भाई	: उत्तर प्रदेश

पदेन सदस्य (सर्व सेवा संघ के पदाधिकारी)

1. प्रबंधक ट्रस्टी, सर्व सेवा संघ
2. महामंत्री, सर्व सेवा संघ

आमंत्रित (प्रदेश सर्वोदय मंडल/मित्र मंडल के संयोजक)

1. अशोक शरण, संयोजक, दिल्ली प्रदेश सर्वोदय मंडल
2. विशालनाथ राय, संयोजक, अरुणाचल प्रदेश सर्वोदय मंडल
3. रतनजय त्रिपुरा, संयोजक, त्रिपुरा प्रदेश सर्वोदय मित्र मंडल
4. खम्मनाल शांडिल्य, महामंत्री, छत्तीसगढ़ प्रदेश सर्वोदय मित्र मंडल
5. गुलाब महतो, संयोजक, झारखंड प्रदेश सर्वोदय मित्र मंडल

आमंत्रित (सर्व सेवा संघ के ट्रस्टी)

1. डॉ.रामजी सिंह
2. महावीर त्यागी
3. तपेश्वर भाई
4. शशि त्यागी
5. इ. पी. मेनन

आमंत्रित (सर्व सेवा संघ के भूतपूर्व अध्यक्ष)

1. पी. गोपीनाथन् नायर
2. नारायण देसाई
3. डॉ.गंगा प्रसाद अग्रवाल
4. अमरनाथ भाई
5. डॉ. सुगन बरंठ
6. राधाबहन भट्ट

आमंत्रित (विविध)

1. डॉ. एस एन. सुब्बराव, संयोजक, सर्वोदय समाज
2. पी. वी. राजगोपाल, अध्यक्ष, एकता परिषद
3. सुदर्शन आयंगार, कुलनायक, गुजरात विद्यापीठ
4. बिमल कुमार, संपादक, सर्वोदय जगत
5. चिन्मय मिश्र, का. संपादक, सर्वोदय प्रेस सर्विस
6. रमेश दाने, संपादक, साम्ययोग साधना
7. सुरेन्द्र कुमार, मंत्री, गांधी शांति प्रतिष्ठान
8. लक्ष्मी दास, मंत्री, हरिजन सेवक संघ
9. पी. गोपीनाथन् नायर, अध्यक्ष, गांधी स्मारक निधि
10. कुमार कलानंद मणि, गोवा
11. अरविंद अंजुम, राष्ट्रीय संयोजक, जनमुक्ति संघर्ष वाहिनी
12. सुशांत, राष्ट्रीय संयोजक, छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी
13. फैसल खान, संयोजक, खुदाई खिदमतगार
14. रजनीश कुमार, मंत्री, राजघाट समाधि समिति
15. अविनाश काकड़े, किसान अधिकार अभियान
16. किशन गोरडिया, सद्भावना संघ
17. मा. म. गड़करी, भूतपूर्व अध्यक्ष,सेवाग्राम आश्रम प्रतिष्ठान
18. अण्णा जाधव, गोरक्षा सत्याग्रह समिति
19. लवणम, नास्तिक केन्द्र

श्री भवानी शंकर कुसुम सर्व सेवा संघ के **प्रवक्ता** होंगे।

अध्यक्षजी ने बताया कि अन्य पदाधिकारियों एवं समितियों के संयोजकों की घोषणा बाद में की जायेगी।

श्री महादेव विद्रोही, सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष निर्वाचित किये जाने के कारण उनके स्थान पर कार्यसमिति ने **श्री टी.आर.एन.प्रभु** को सर्वसम्मति से **सर्व सेवा संघ का प्रबंधक ट्रस्टी** नियुक्त किया। **–मारोती गावंडे**
कार्यालय मंत्री

घोषणापत्रों का अन्वेषण

❑ आशीष कोठारी

चुनावी घोषणापत्र इस बात की ओर इशारा करते हैं कि सत्ता में आने पर राजनीतिक दल क्या करना चाहते हैं। यह जरूरी नहीं है कि सत्ता में आने पर वे इस पर अमल करें, लेकिन इससे दल की मनःस्थिति का भान होता है कि किस तरह जनता के हितों की रक्षा की जायेगी। इस लिहाज से आम आदमी पार्टी का घोषणापत्र कांग्रेस और भाजपा से कहीं आगे है। इस वक्त भारत के सामने तीन प्रमुख चुनौतियां हैं, जिम्मेदार एवं जवाबदेह राजनीतिक शासन को हासिल करना, आर्थिक और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करना (विशेषकर ऐसे व्यापक वर्ग हेतु जो कि अभी भी गरीब है) और बिना पारिस्थितिकीय विध्वंस किए जीवन को जीने लायक बनाना। विकास के कई दशक पुराने मॉडल जिसमें कि पिछले दो दशकों का वैश्विक संस्करण भी शामिल है, इसे प्राप्त नहीं कर पाया है और इसने भारत को कमजोर ही किया है।

शासन के स्तर पर भ्रष्टाचार एवं सार्वजनिक क्षेत्र में अकर्मण्यता अभी भी व्याप्त है। लोगों को सशक्त बनाने वाली स्वशासी संस्थाएं कमजोर बनी हुई हैं और हस्तांतरण की ओर बढ़ते पूर्व रूप से गैरजवाबदेह श्रेष्ठी वर्ग को राजनीतिक शक्ति सौंप दी है। यदि सामाजिक-आर्थिक मोर्चे पर बात करें तो विभिन्न प्रकार वंचन (भोजन, पानी, रहवास, वस्त्र, सेनीटेशन, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा) से कम से कम 70 प्रतिशत जनसंख्या जूझ रही है और इन्हें भी निजी हाथों में सौंपा जा रहा है, जिससे कि ये अमीर लोगों के हाथ में जा रही है और गरीबों की पहुंच से बाहर होती जा रही है। अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती खाई (भारत की आधी से अधिक संपत्ति 10 प्रतिशत के हाथ में है) भी हमें शर्मिन्दा करती है। अंत में पर्यावरणरण के मोर्चे पर अनेक सर्वेक्षण हमें बता रहे हैं कि हम अस्थिरता और आत्मघात के फिसलन भरे रास्ते पर चल रहे हैं और विश्व बैंक सरीखा संकुचित नजरिये वाला संगठन भी पर्यावरणीय लागत घटाने के बाद भारत का सकल घरेलू उत्पाद में शून्य प्रतिशत वृद्धि बता रहा है।

शासन : व्यक्तियों को सशक्त बनाए बिना जवाबदेह व जिम्मेदार राजनीतिक शासन असंभव है। ऐसे में प्रथम तल पर गांवों में ग्रामसभा व नगरों में मोहल्ला समितियों को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना होगा। वैसे तो सभी दल विकेन्द्रीयकरण की बात करते हैं, लेकिन 'स्वराज' के माध्यम से आप इसके सबसे नजदीक पहुंचा है और उसने वायदा किया है कि विकास गतिविधियों हेतु सीधे स्थानीय निकायों को धन देगी और भुगतान में भी लोगों की सहमति ली जायेगी। बाकी के दोनों दल शहरी शासन के विकेन्द्रीकरण पर मौन हैं।

सत्ता के विकेन्द्रीकरण का सबसे गंभीर पक्ष है कि भूमि, प्राकृतिक संसाधनों और अन्य मुद्दों का, जिन पर की लोगों का जीवन व जीविका निर्भर है, का क्या होगा? सिर्फ 'आप' ने ही कहा है कि भूमि अधिग्रहण एवं खनिज, वन एवं जल ग्रामसभा के अधिकार क्षेत्र में होंगे। मजेदार बात यह है कि कांग्रेस भी वन अधिकार कानून के क्रियान्वयन एवं वनों को अन्य परियोजनाओं में हस्तांतरित करने पर मौन रही है। यही हाल भाजपा का भी है।

यदि सामाजिक-आर्थिक मोर्चे पर बात करें तो आर्थिक वैश्वीकरण के पिछले दो दशकों ने संगठित क्षेत्र में रोजगार सृजन रोक-सा दिया है। सभी दल रोजगार में असाधारण वृद्धि की बात कर रहे हैं। बीजेपी ने श्रम आधारित उद्यमों पर जोर दिया है। आप का भी कहना है कि रोजगार सृजन उसकी आर्थिक नीति का प्राथमिक लक्ष्य है तथा वह गांव से शहरों की ओर पलायन रोकेगी। इस हेतु वह पारंपरिक उद्योगों को बढ़ावा देगी, छोटे उद्योगों एवं कृषि क्षेत्र जिसे बेहतर अधोसंरचना उपलब्ध होगी औपचारिक ऋण तक आसान पहुंच और यथोचित तकनीकी हस्तक्षेप तथा बेहतर समर्थन मूल्य की व्यवस्था करेगी। कांग्रेस का भी 'रोजगार एजेंडा' है, जो कि सरकार बनाने के 100 दिनों के भीतर लागू हो जायेगा। परंतु लगता नहीं है कि उसने पिछले दो दशकों की रोजगार विहीन वृद्धि दर से कुछ सबक लिया है और वह औद्योगिक कॉरीडोर, शहरी क्लस्टर, निर्यात वृद्धि की रट लगाये हुए है।

दुर्भाग्यवश इन वायदों की कोई कीमत नहीं है। पिछले दो दशकों में लाखों मजदूर घर बैठ गये हैं। जबरिया विस्थापन से लोग मछली मारने, वानिकी, कृषि, शिल्प, पशुपालन जैसे अनेक उद्यमों से बाहर हो गये हैं। आर्थिक असमानता की बढ़ती खाई की अनदेखी सभी दलों ने की है। किसी भी दल ने अनाप-शनाप वेतन, संपत्ति, अमीरों को दिये जा रहे लाभ पर रोक लगाने की बात नहीं की है।

पर्यावरणीय सुस्थिरता : पर्यावरण के मोर्चे पर हम पाते हैं कि तीनों ही दल एक जैसे ही हैं। वे भारत (और पूरी पृथ्वी) की सीमित प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों को संकट में डाले बिना अगली पीढ़ी तक पहुंचाने पर चुप हैं तथा जीडीपी पर ही अपना दांव लगा रहे हैं। भाजपा व कांग्रेस से तो ऐसी ही उम्मीद थी, पर इस मामले में आप ने आश्चर्य में डाल दिया है। क्योंकि इसकी कार्यकारिणी में ऐसे अनेक सदस्य हैं जो इन विरोधाभासों को समझते हैं। वैसे पिछले कुछ महीनों में कांग्रेस ने पर्यावरण के प्रति कुछ सम्मान दिखाया है, लेकिन तीसरी बार वह ऐसा करेगी इसके संकेत घोषणापत्र से नहीं मिले। बल्कि निवेश पर केबिनेट कमिटी बनाकर उसने भविष्य के संकेत दे दिये हैं।

प्रत्येक दल ने जलसंवर्धन को लेकर विकेन्द्रीकरण की बात कही है, लेकिन किसी ने भी यह नहीं कहा है कि इसे महाकाय परियोजनाओं की बनिस्बत प्राथमिकता दी जायेगी। सभी घोषणापत्रों में रिन्युवेबल ऊर्जा की बात की गयी है। आप के घोषणापत्र में इस तरह स्रोतों को स्थानीय हाथों में सौंपने की बात है। सभी निर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने की बात कर रहे हैं। लेकिन बढ़ते शर्मनाक उपभोक्तावाद, खासकर अमीरों द्वारा एवं अनैतिक विज्ञापन पर सभी मौन हैं। किसी ने भी यह उल्लेख नहीं किया है कि खतरनाक प्लास्टिक और इलेक्ट्रानिक अपशिष्ट से कैसे मुक्ति पायी जायेगी। वैसे भाजपा ने एक सार्वजनिक यातायात प्रणाली के माध्यम से निजी वाहनों पर निर्भरता समाप्त करने की प्रशंसनीय पहल दिखायी है। इसमें यात्रा समय व पर्यावरणीय लागत का भी उल्लेख है। कांग्रेस ने भी सार्वजनिक यातायात का उल्लेख किया है, लेकिन निजी के मुकाबले इसे प्राथमिकता नहीं दी है। वैसे आप ने इस पर आश्चर्यजनक चुप्पी साधी है।

कृषि के संबंध में संरक्षण, जैविक प्रणाली, सूखी खेती आदि को लेकर स्वागतयोग्य प्रतिबद्धता दर्शाई गयी है। वहीं आप ने खेती एवं पशुओं की देशज किस्मों को प्रोत्साहन देने की बात भी की है। लेकिन हरित क्रांति संबंधित प्राथमिकता को लेकर अभी भी स्पष्टता नहीं है। जीनांतरित बीजों (जीएम) को किसी भी दल ने अस्वीकार नहीं किया है। वैसे भाजपा ने घोषणापत्र में पूरी तरह से वैज्ञानिक परीक्षण, मिट्टी पर इसके दीर्घकालिक प्रभाव, उत्पादन और जैविक प्रभाव के परीक्षण के बाद अनुमति का कहा है। कांग्रेस ने खुदरा में एफडीआई की वकालत की है। कृषि में विदेशी निवेश के विपरीत प्रभाव पड़ सकते हैं। भाजपा व आप ने कम से कम इसे नकारा है।

सामान्य तौर पर कहें तो इन तीनों दलों में से केवल आप ही है जिसने 'पर्यावरण' व 'अर्थव्यवस्था' को अंतर्निहित समानता माना है और एक विशिष्ट विकास मॉडल की बात की है जो कि 'न्यायपूर्ण व सुस्थिर होगा।' लेकिन इसका अर्थ समझा पाने में वह भी असफल रही है। इस तरह के मॉडल में स्थानीयता सर्वोपरी है। वैसे आप के घोषणापत्र में भी आंतरिक विरोधाभास दिखायी देता है। खासकर आर्थिक पारिस्थितिकीय मोर्चे पर। कांग्रेस व भाजपा अपने पूर्ववर्ती रुख पर ही कायम हैं। इससे भारत भविष्य में राजनीतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय गिरावट की ओर ढुलक सकता है। *(सप्रेस)*

गांधी-विचार का स्नातकोत्तर डिप्लोमा

गांधी-विचार परिषद आठ माह का निवासी पदवी का पाठ्यक्रम गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) में संचालित कर रही है। इसका उद्देश्य गांधीजी के जीवन, तत्त्वज्ञान और तौर-तरीकों के गहन अध्ययन का अवसर प्रदान करना है। यहाँ सामुदायिक जीवन, शरीर-श्रम, स्वच्छता, खेती, कताई, भक्ति-संगीत की भी नियमित शिक्षा दी जाती है। गांधी विचार के आंदोलनों से जुड़े सुविख्यात विद्वान, रचनात्मक कार्यकर्ता तथा सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् यहां विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं।

पाठ्यक्रम परिश्रम—शारीरिक और मानसिक सातत्यपूर्ण साधना की अपेक्षा रखता है। कक्षाओं में होने वाले नियमित शैक्षिक व्याख्यानों में स्वनुशासन, श्रम-गौरव और स्वावलंबन पर आधारित जीवन-दृष्टि भी विकसित करने का प्रयास करती है।

प्रवेशार्थी किसी भी विश्वविद्यालय या समकक्ष संस्था के स्नातक या स्नातकोत्तर होना चाहिए, जैसे कला, विज्ञान, वाणिज्य, शांति अध्ययन, गांधी-विचार, समाज-कार्य, औषधी विज्ञान, इंजीनियरिंग इत्यादि। आयु सीमा अधिकतम 30 वर्ष है। योग्य प्रवेशार्थियों के लिए आयु-सीमा संस्था कम कर सकती है। प्रवेश संख्या अधिकतम 15 है।

आठ माह की अवधि संतोषप्रद समाप्ति के पश्चात् विद्यार्थियों के कार्यों पर आधारित समुचित मूल्यांकन के पश्चात् 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को पदवी प्रदान की जायेगी। मूल्यांकन का आधार लिखित परीक्षा, सेमिनार, खेती-कार्य, कताई, संगीत और सामुदायिक जीवन इत्यादि होगा।

संस्था द्वारा पाठ्यक्रम के लिए किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता। लेकिन विद्यार्थियों को विद्यापीठ के साथ पंजीयन करने के लिए रुपये 500/- प्रवेश शुल्क देना होगा। छात्रावास की सुविधाएं निःशुल्क प्रदान की जाती हैं। आर्थिक रूप से कमजोर छात्र/छात्राओं को या ऐसे छात्र/छात्राओं को जिन्हें उनकी संस्थाओं द्वारा आर्थिक मदद नहीं दी जाती, ऐसों को विद्या-वेतन भी दिया जाता है। विद्यावेतन रुपये 1,500/- प्रतिमाह है। उसमें से 1,150/- प्रतिमाह भोजन खर्च काटकर 350/- नकद रकम प्रतिमाह दी जाती है।

वर्धा आने-जाने का खर्च छात्र/छात्राओं को या वे जिस संगठन द्वारा मनोनीत किये जाते हैं, उन संगठनों को करना होता है।

जो प्रार्थी प्रवेश के इच्छुक हैं वे 30 जून, 2014 के पहले निम्नलिखित पते पर आवेदन भेजें—*अधिष्ठाता, गांधी-विचार परिषद, गोपुरी, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)।*

जुलाई के प्रथम सप्ताह तक प्रवेश की पात्रता वाले छात्र/छात्राओं को सूचना भेज दी जायेगी। ऐसे सभी छात्र/छात्राओं को अपने मूल प्रमाणपत्रों के साथ संस्था में व्यक्तिगत साक्षात्कार के लिए उपस्थित रहना होगा, तत्पश्चात् उनका प्रवेश मान्य होगा। कोर्स अगस्त माह के प्रथम सप्ताह में आरंभ होगा तथा अप्रैल के प्रथम सप्ताह में समाप्त होगा। **–भरत महोदय, संचालक**

पहचान तो लें विरासत के निशान

❑ अरुण तिवारी

यूनेस्को की टीम सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्त्व की जिन संपत्तियों को 'विश्व विरासत' का दर्जा देगी, वे विश्व विरासत का हिस्सा बन जायेंगी। उन्हें संजोने और उनके प्रति जागृत प्रयासों को अंजाम देने में यूनेस्को भी साझा करेगा। यूनेस्को यानी संयुक्त राष्ट्र संघ का शैक्षिण, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन। ऐतिहासिक महत्त्व के स्थानों व इमारतों की एक अंतर्राष्ट्रीय परिषद् 'इकोमोस' द्वारा 18 अप्रैल, 1982 को ट्युनिशिया में आयोजित एक सम्मेलन में जब पहली बार 'विश्व विरासत दिवस' का विचार पेश किया गया, तब मंतव्य इतना ही था। यूनेस्को ने 1983 के अपने 22वें अधिवेशन में इसकी मंजूरी दी। आज तक वह 981 संपत्तियों को विश्व विरासत का दर्जा दे चुका है। जिनमें सबसे अधिक 49 संपत्तियों के साथ इटली सबसे आगे और 30 संपत्तियों के साथ भारत सातवें स्थान पर है। अपनी विरासत संपत्तियों का सबसे बेहतर रखरखाव व देखभाल करने का सेहरा जर्मनी के सिर है। संकटग्रस्त विरासतों की संख्या 44 हैं।

30 भारतीय संपत्तियां हुईं 'विश्व विरासत' : गौरतलब है कि आज भारत के छह प्राकृतिक और 24 सांस्कृतिक महत्त्व के स्थान/इमारतें विश्व विरासत की सूची में दर्ज हैं। अजंता की गुफायें और आगरा फोर्ट ने इस सूची में उसबसे पहले 1983 में अपनी जगह बनायी। सबसे ताजा शामिल स्थान राजस्थान के पहाड़ियों पर स्थित रणथम्भौर, अंबर, जैसलमेर और गगरोन किले हैं। ताजमहल, लालकिला, जंतर-मंतर, कुतुब मीनार, हुमायुँ का मकबरा, फतेहपुर सीकरी, अंजता-एलोरा की गुफायें, भीमबेतका की चट्टानी छत, खजराहो के मंदिर, महाबलीपुरम् , कोणार्क का सूर्यमंदिर, चोल मंदिर, कर्नाटक का हम्पी, गोवा के चर्च, सांची के स्तूप, गया का महाबोधि मंदिर, आदि प्रमुख सांस्कृतिक स्थली हैं।

प्राकृतिक स्थानों के तौर पर कांजीपुरम् वन्य उद्यान, नंदा देवी की खूबसूरत पहाडियों के बीच स्थित फूलों की घाटी और केवलादेव पार्क भी इस सूची में शामिल हैं। पहाड़ी इलाकों में रेलवे को इंजीनियरिंग की नायाब मिसाल मानते हुए तमिलनाडु के नीलगिरि और हिमाचल के शिमला-कालका रेलवे को विश्व विरासत होने का गौरव प्राप्त है। कभी विक्टोरिया टर्मिनल के रूप में विश्व मशहूर रहा मुम्बई का रेलवे स्टेशन आज छत्रपति शिवाजी टर्मिनल के रूप में विश्व विरासत का हिस्सा है।

प्रतीक्षा सूची में 33 : अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, लेह-लद्दाख और सारनाथ के बौद्ध स्थल, प. बंगाल का विशुनपुर, पाटन का रानी का वाव, हैदराबाद का गोलकुण्डा, मुंबई का चर्चगेट, सासाराम स्थित शाह सूरी का मकबरा, कांगड़ा रेलवे और रेशम उत्पादन वाले प्रमुख भारतीय क्षेत्रों समेत 33 भारतीय संपत्तियां अभी प्रातीक्षा सूची में हैं। यदि पाक अधिकृत कश्मीर के गिलगित बलास्तिान वाले हिस्से में उपस्थित बाल्तित के किले को भी इसमें शामिल कर लें तो प्रतीक्षा सूची की यह संख्या 34 हो जाती है।

उल्लेखनीय है कि यूनेस्को ने विरासत शहरों की एक अलग श्रेणी और संगठन बनाया है। कनाडा इसका मुख्यालय है। इस संगठन की सदस्यता प्राप्त 233 शहरों में फिलहाल भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश का कोई शहर शामिल नहीं है। आप यह जानकर संतुष्ट अवश्य हो सकते हैं कि एक विरासत शहर के रूप में जहां हड़प्पा सभ्यता के सबसे पुराने निशानों में एक-धौलवीरा और आजादी का सूरज उगने से पहले प्रमुख निशान के रूप दिल्ली को भी 'विश्व विरासत शहर' का दर्जा देने के बारे में सोचा जा रहा है।

विरासत के कुछ और निशान : इन तमाम आंकड़ों से इतर विरासत का वैश्विक पक्ष चाहे जो हो, भारतीय पक्ष यह है कि विरासत सिर्फ कुछ परिसंपत्तियां नहीं होतीं। बाप-दादाओं के विचार, गुण, हुनर, भाषा, बोली और नैतिकता भी विरासत की श्रेणी में आते हैं। संस्कृति को हम सिर्फ कुछ इमारतों या स्थानों तक सीमित करने की भूल नहीं कर सकते। भारतीय सांस्कृतिक विरासत का मतलब 'अतिथि देवो भवः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम' से लेकर 'प्रकृति माता, गुरु पिता' तक है। गो, गंगा, गीता और गायत्री आज भी हिंदू संस्कृति के प्रमुख निशान माने जाते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब, बाइबिल और कुरान को विरासत के चिन्ह मानकर संजोकर रखने का मतलब किसी पुस्तक को संजोकर रखना नहीं है। इसका मतलब उनमें निहित विचारों को शुद्ध मन व रूप में अगली पीढी को सौंपना है। क्या हम ऐसा कर रहे हैं?

प्रश्न कीजिए कि क्या हमारे हुनरमंद अपना हुनर अगली पीढी को सौंपने को संकल्पित दिखाई देते हैं? योग, ध्यान, अध्यात्म, वेद, आयुर्वेद और परंपरागत हुनर की बेशकीमती विरासत को आगे बढ़ाने में यूनेस्को की रुचि हो न हो, क्या भारत सरकार की कोई रुचि है? क्या गंगा, गो और भारतीय होने के हमारे गर्व की रक्षा के लिए आज कोई सरकार, समाज या हम खुद संकल्पित दिखाई देते हैं? नैतिकता की विरासत का हश्र हम हर रोज अपने-अपने घरों, सड़कों और चमकते स्क्रीन पर देखते ही हैं। अनैतिक हो जाने के लिए हम नयी पीढ़ी को दोष जरूर देते हैं, किंतु क्या यह सच नहीं कि हम अपने बच्चों पर हमारी गंवई बोली तो दूर, क्षेत्रीय-राष्ट्रीय भाषा व संस्कार की चमक तक का असर डालने में नाकामयाब साबित हुए हैं। सोचिए! अगर हम विरासत के मूल्यवान मूल्यों को ही नहीं संजो रहे तो फिर कुछ इमारतें और स्थानों को संजोकर क्या गौरव हासिल होगा? विश्व विरासत दिवस पर सोचने के लिए यह एक गंभीर प्रश्न है।

आइये! इन्हें संजोयें : सावधान होने की बात है कि जो राष्ट्र अपनी विरासत के निशानों को संभला कर नहीं रख पाता, उसकी अस्मिता और पहचान एक दिन नष्ट हो जाती है। क्या भारत ऐसा चाहेगा? यदि नहीं तो हमें याद रखना होगा कि गुरुकुलों, मेलों, लोककलाओं, लोककथाओं और संस्कारशालाओं के माध्यम से भारत सदियों तक अपनी सांस्कृतिक विरासत के इन निशानों को संजोये रख सका। माता-पिता और ग्राम गुरु के चरण स्पर्श और नानी-दादी की गोदियों और लोरियों में इसे संजोकर रखने की शक्ति थी। नासिक नगरनिगम ने बोर्ड लगाकर चेतावनी दे दी है—''गोदावरी का पानी उपयोग योग्य नहीं है।'' अब गंगा की दुलर्भ विरासत भी कहीं हमसे छूट न जाये। भारतीय अस्मिता व विरासत के इन निशानों को संजोना ही होगा। आइये, संजोयें। ❑

कार, ट्रक व विवाह : भारत की नयी महामारियां

❑ ग्राहम पीब्लेस

भारत के अस्त-व्यस्त शहरों एवं नागरिकों पर दम घोटू धुआं और बदबूदार कचड़े के ढेरों के साथ ध्वनि विस्तारक और कारों, ट्रकों और चिंघाड़ती बसों से बमबारी करते हार्न लगातार आक्रमण करते रहते हैं। लाउडस्पीकरों का उपयोग राजनीतिक विचार फैलाने, खर्चीली, तयशुदा शादियों को मनाने व उन्हें प्रचारित करने के लिए मंदिरों एवं मस्जिदों के ठीक बाहर लगाकर शोर के साथ मुक्ति का सही मार्ग बताने के लिए किया जाता है।

शहरों और नगरों में ध्वनि प्रदूषण असहनीय होता जा रहा है और यह लोगों के स्वास्थ्य को जबर्दस्त प्रभावित कर रहा है। इस वजह से सुनने की समस्या, नींद में गड़बड़ी, हृदयरोग, कार्यस्थल एवं विद्यालयों में कार्यक्षमता में दिक्कतें आदि उस सामाजिक महामारी के कुछ लक्षण हैं, जिनसे राष्ट्र में न केवल तनाव में वृद्धि हो रही है, बल्कि पर्यावरण का ह्रास भी हो रहा है।

किसी समय उत्सवधर्मिता को इस असाधारण राष्ट्र के आकर्षण का एक हिस्सा माना जाता था। लेकिन निम्न स्तरीय सेनीटेशन, बदबूदार झुग्गी बस्तियां और खुले सीवर के बाद शोर, वायु एवं जल-प्रदूषण को अब एक प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दा माने जाने लगा है और इस पर तुरंत सरकारी व सामुदायिक कार्रवाई की मांग की जा रही है।

हार्न की आवाज : विश्व के सबसे शोरभरे शहरों को लेकर हुए सर्वेक्षण में भारत को तीनों, स्वर्ण, रजत व ताम्र पदक प्राप्त हुए हैं। इसमें यहां की राजधानी दिल्ली प्रथम आयी है, जिसमें 70 लाख से अधिक वाहन (भारत के तीन अन्य महत्त्वपूर्ण शहरों के वाहनों के योग के बराबर) प्रतिदिन सड़कों पर होते हैं। इसके तुरंत बाद भारत का सबसे अधिक जनसंख्या वाला (2.1 करोड़) एवं सर्वाधिक समृद्ध शहर मुम्बई और उसके बाद कोलकाता आता है। गौरतलब है कि कर्कशता में सर्वाधिक योगदान कार एवं मोटर साइकिलें करती हैं। यहां वाहन चालन को शोरभरा बना दिया गया है और बजाए पीछे (बैकव्यू) देखने वाले कांच के प्रयोग के, आगे निकलने या ओवरटेक करने का प्रयास किया जाता है। 'बीसीसी' के अनुसार मुड़ने के दौरान या किसी चौराहे, दोराहे पर पहुंचकर रफ्तार धीमी करने के बजाए ड्राइवर तेज हार्न बजाकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। वे साइकिल चालक, पदयात्री, बच्चों, कुत्तों, गायों और उन सभी को, जो दुर्भाग्यवश समानांतर धीमे चलते हैं, के कान में जोर से भोंपू बजाते हैं। हर ट्रक के रंगीन पिछवाड़े पर अनिवार्य रूप से यह नारा लिखा होता है कि 'जोर से हार्न बजाएं'। ऐसा जंक्शन जहां से ड्राइवर को सीधे हाथ की ओर मुड़ना हो वहां की सभी लेन भले ही सीधे जाने वाली क्यों न हों, पर वह बाधा खड़ी कर देता है और गुस्से एवं तेजी से हार्न बजाने में लीन हो जाता है।

विद्यालयों एवं अस्पतालों के आसपास हार्न बजाने की अनुमति नहीं है, लेकिन यह भी एक ऐसा कानून है जिसे व्यापक रूप से लागू नहीं किया गया है और खतरनाक तरीके से इसकी अनदेखी की गयी है। छोटे कुत्तों की ही तरह छोटे वाहन सबसे ज्यादा शोर करते हैं। ये बहुत खतरनाक तरीके से शहरों में दौड़ते हैं और अनपेक्षित रूप से एकाएक आपके सामने सड़कों पर प्रकट हो जाते हैं। दिनभर व्यस्त रही सड़कें रात में सूनी तो होती हैं, लेकिन इस दौरान ट्रक उन पर जबरिया काबिज हो जाते हैं। यह 'सड़कों के राजा' 118 डेसीबल के अपने हार्न जो कि आकाशी बिजली की गड़गड़ाहट के बराबर होता है, से इन सड़कों पर राज करते (शहरी क्षेत्रों में विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देश 50 डेसीबल के करीब के हैं और 85 डेसीबल से ऊपर का कैसा भी शोर कानों को नुकसान पहुंचा सकता है) हुए सभी छोटे एवं शांत वाहनों एवं नींद लेने वाले लोगों के ऊपर अपने प्रभुत्व का नगाड़ा पीटते गुजरते हैं।

शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में वाहन चलाना भयानक जोखिमभरा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार भारत में सन् 2010 में सड़क दुर्घटनाओं से 2,31,027 व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी। परिवार या तीन, चार या पांच लोग विद्यालय के बस्ते या रोजमर्रा की खरीदी के साथ आपको एक ही मोपेड या मोटरसाइकिल पर दिखाई पड़ जायेंगे। इतना ही नहीं उनके सिर पर आपको हेलमेट (यह भी एक लागू न होने वाला कानून है) भी दिखाई नहीं देगा। बहुत खराब रखरखाव वाली व क्षमता से बहुत अधिक भरी बसें अपनी कमाई बढ़ाने के लिए हार्न के सहारे तेज रफ्तार से एक स्टाप से दूसरे बस स्टाप के बीच में अंधाधुंध दौड़ती नजर आती हैं। यदि नियम की बात करें तो सड़क पर किसी भी तरह की विनम्रता कमोवेश यहां नदारद है।

भारत में कानूनों को विदेशी मेहमानों के समक्ष उदार गहनों की तरह प्रस्तुत किया जाता है और बाद में उनसे लोकतांत्रिक धूल इकट्ठा करने को कह दिया जाता है। दिल्ली से लेकर नीचे तक के सभी राजनीतिज्ञों ने भ्रष्टाचार एवं बेईमानी का स्वर फैलाकर समाज के सभी वर्गों यानी ट्रक ड्राइवर से लेकर कारपोरेट के लोगों तक को यह संदेश दे दिया है कि कानून का कोई अर्थ नहीं है। न तो उन्हें लागू करने के लिए और न ही उनका पालन करने के लिए किसी को बाध्य किया जायेगा।

अंधेरा होने के बाद आपको तब बहुत ही रंगीन शोर दिखायी पड़ता है जब अंधेरी सड़कों पर मोटर साइकिल, कार, ट्रक और ट्रैक्टर भी बिना अपनी हेडलाइट के और अकसर गलत दिशा में चलते दिखायी पड़ते हैं। यह शोरभरी लापरवाही व नियमों की अवहेलना से भरा वाहन चालन न केवल खतरनाक है बल्कि यह कइयों के लिए मौत का सामान भी बन जाता है। वैसे यह सभी के लिए जोखिम भरा तो है ही।

ध्वनि प्रदूषण, फिर वह नाराज ट्रकों व कारों का कोरस हो या चार दिन लंबी शादी का या चुनावी राजनीति का, कुल मिलाकर अस्वास्थ्यकर, अरुचिकर और नागरिकों की निजता का जबर्दस्त अतिक्रम है। ❑

हम और हमारा घर-संसार

❑ लक्ष्मीनारायण प्रधान 'लक्खु'

गांधी दर्शन को आधार बनाते हुए हम अपने मुफलिसी जीवन-स्तर को आदर्श व बेहतर बना सकते हैं। हमारा घर जैसा भी हो उसे व्यवस्थित रूप से सुधार लिया जाये। घर के कोने-कोने को साफ, स्वच्छ रखा जाये। प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर घर व आँगन को साफ-सुथरा करें। यदि घर के कोने-कोने में गड्ढा वगैरह हो तो, उसे सीमेंट आदि से भर दें। यदि नीचे मिट्टी है तो प्रतिदिन या वक्त-वक्त पर प्रत्येक कमरे को गऊगोबर से लीपें। घर में बर्तन झूठे व अस्त-व्यस्त पड़े न हों, उन्हें माँजकर व अच्छी तरह से धोकर बर्तनरेक पर जमाकर रखें। चौका हमेशा साफ रखें। जहां खाना बनता है, वहां ऊपर भी साफ, स्वच्छ हो। यदि कवेलू का मकान है तो वहाँ ऊपर कपड़ा तानकर बाँध दें ताकि खाना बनाने में ऊपर से कुछ न गिरे। खाना हमेशा ढँक कर बनायें। आटा गूँथने से पहले व खाना बनाने से पहले अपने हाथों को अच्छी तरह से साबून से धो लें। साग-सब्जी को भी साफ पानी में अच्छी तरह से धो लेना चाहिए। चूल्हे पर बर्तन रखकर पहले उसे गरम होने दें फिर उसे झाड़ दें। उसके बाद उसमें खाना बनाएं। खाना, दूध व पीने के पानी को हमेशा अच्छी तरह से ढँककर रखें। पीने के पानी को हमेशा छानकर भरें। मटके या गगरी से पानी डोंगे से ही निकालें। उसमें जूठा गिलास न डालें। पानी जब भी पीयें बैठकर पीयें। बिस्तर हमेशा साफ धुले हों। तकिए भी साफ व धुलें हों। कपड़े चाहे जैसे भी हों, धुले हों। फटे हों तो उसे सील दें। कपड़ों को भी जमाकर रखें। इधर-उधर पड़े न हों। प्रतिदिन स्नान करें। बच्चों को भी स्नान करायें। उन्हें साफ-सुथरे व पूर्ण कपड़े पहनायें। बच्चों को हमेशा साफ-सुथरा रखें। उन्हें खाना आदि देने के पहले उनके दोनों हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धो दें। और उन्हें इसकी आदत भी डालें। प्रतिदिन स्नान करके अपने इष्टदेव की पूजा करें। दीपक या अगरबत्ती लगायें। पश्चात् चाय, नाश्ता आदि तैयार करें। संध्या को भी अपने ईश्वर की पूजा करें। दीपक जलायें। श्रद्धा व प्रेम से अपने आराध्य देव की पूजा करें। उसके बाद सब मिलकर भोजन एक निश्चित स्थान पर बैठकर प्रेम से करें। भोजन में जो भी बना हो यहां तक कि चटनी, रोटी, प्याज ही क्यों न हो उसे थाली में परोस कर तथा सजाकर बड़े आदर के साथ अत्यन्त प्रेमपूर्वक उसका स्वाद लेकर करें। उसको ईश्वर का प्रसाद समझ कर उस कौर को ग्रहण करें। जल को चरणामृत समझकर पीयें।

बाजार से पिसी हुई मिर्च, हल्दी, धनिया कभी भी न लें। इसमें मिलावट होता है, जो गंभीर बीमारी को न्यौता देता है। घर पर सिलबट्टा रखें जिसमें खड़ी मिर्च, हल्दी, धनिया पीसें और उपयोग में लायें। पीसने के बाद उस सिलबट्टे को अच्छी तरह से धो-पोंछकर साफ जगह पर रखें और उसे अच्छी तरह से ढँक दें। बाजार से खाने-पीने की सस्ती चीजें कभी न लें। अकसर ग्रामीण महिलाएं सस्ता जानकर सड़े-गले केले व अन्य सब्जी ले लेती हैं। इससे उन्हें बचकर रहना चाहिए। ऐसी सड़ी-गली चीजें कभी न लें।

अकसर देखा गया है, निर्धन घरों में चूंकि उनकी पगार पर्याप्त होती है, लेकिन पति शराब में पैसे उड़ा देता है। जुआ भी खेलता है। कहीं-कहीं घरों में तो पति-पत्नी दोनों शराब में डूबे रहते हैं। मांस खाते हैं। यदि मांस-मदिरा का त्याग नहीं करेंगे तो घर में कभी भी बरकत नहीं होगी। घर में शांति नहीं होगी। घर में कलह होगी। घर में दरिद्रता रहेगी। बच्चों पर बुरा असर पड़ेगा। वे बिगड़ जायेंगे। उनका भविष्य बिगड़ जायेगा। इस तरह से वह घर नरक-सा हो जायेगा। इसलिए जिस घर में पति-पत्नी दोनों शराब पीते हैं और मांस खाते हैं तो इसका त्याग कर दें। एक आदर्श घर के लिए जरूरी है कि घर में शराब व मांस का सेवन पूर्णतः बंद कर दें। अपने घर को एक मंदिर-सा बनायें।

गरीबों के लिए शासन की ओर से बहुत-सी योजनाएं बनी हुई हैं। उनका लाभ अवश्य लें। यदि इसकी जानकारी नहीं है तो अपने निकटतम पार्षद, सरपंच, पटवारी से संबंधित दफ्तर या समाज सेवा समितियों से संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त करें और उसका पूरा लाभ प्राप्त करें। शासकीय योजनाओं के अंतर्गत प्राप्त सहायता से अपने जीवन-स्तर को और अच्छी तरह से बेहतर बनाया जा सकता है। अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में पढ़ायें। उनकी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दें। उनको फालतू बच्चों के साथ घूमने-फिरने न दें। हमेशा पढ़ने वाले बच्चों का साथ करायें। जब भी ऐसी कोई कठिनाई या समस्या से ग्रस्त हों तो अपने पार्षद व समाज सेवा समिति से मिलें तथा निराकरण करायें। अपने बच्चों की शादी गायत्री पीठ या किसी सम्मेलन में करायें। इससे आडंबरों में होने वाले अनावश्यक व्ययों से बच जायेंगे। यही पैसा बचेगा तो बच्चों को काम आयेगा।

कभी भी औरों को देखकर उनके जैसा होने का मत सोचें। जैसे पड़ोसी के पास फ्रिज है, उच्च क्वालिटी का टी.वी. है, शानदार पलंग है, शानदार आलमारी है या महँगा मोबाइल है तो वैसा ही हमारे पास भी हो, इसके लिए अपने सुख चैन को मत गँवाएं। परेशान मत होवें। अपनी उन इच्छाओं के पीछे मत भागिए। इस प्रकार की इच्छाएं वास्तव में दूर से ही अच्छी लगती हैं। अपने घर में जो भी है उसमें संतुष्ट रहना चाहिए। हमारे पास जो भी है और अपने समर्थ के अनुसार अपने घर को करोड़ों रुपयों से बने महल जैसा लुक दे सकते हैं।

जब हमारा घर साफ-सुथरा है, घर एक मंदिर के समान है तो जरूरी है हमारा मन

भी साफ-सुथरा हो। मन एक मंदिर के समान हो। उसमें भगवान विराजमान हों।

मन में पवित्र विचार हों। मन में जलन की भावना न हो। सामने वाले को सुखी देखकर या उसकी वस्तु देखकर, उनकी खुशियों को देखकर खुश होइए। उनकी खुशियों से अपने पेट भरिए। क्योंकि आपके पवित्र मन में भगवान बैठा हुआ है। वह सब देख रहा है। वह अपने भक्त की वांछित मनोकामनाएं अवश्य पूरा करते हैं। बस हमको करना यह है कि अपने मन को साफ रखना है। अपने बच्चों को खूब अच्छी तरह से पढ़ाना-लिखाना है। उन्हें काबिल बनाना है। कभी भी अपने कामों में लापरवाही न करें और न उस काम को हीन ही समझें। आप जो भी कार्य करते हों उसे पूरे मन से संतुष्ट होकर करें। रुचि से करें। कमाये हुए उन पैसों को सँभालकर खर्च करें। जरूरत की चीजों पर ही खर्च करें और आगे बढ़ें।

घर में शौचालय हमेशा साफ-सुथरा रखें। अंदर की दीवारों में दरारें न हों, नीचे गड्ढे व गंदा न हो। दीवारें चटख रंगों से पेंट हों। शौचालय रोजाना डिटरजेंड पावडर से अच्छी तरह से धोयें। कुल मिलाकर हमारा शौचालय चकाचक हो। इससे घर में मानसिक शांति बनी रहेगी। सुकून मिलेगा। सकारात्मक ऊर्जा का उत्सर्जन होता रहेगा।

इस तरह से जब एक-एक घर सँवरता चला जायेगा तो एक दिन सारे घर सँवर जायेंगे। इसके लिए जरूरी है उन गरीब व असहाय घरों को दिशा-निर्देश देने की। उनको समझाने की। जिन घरों में मांस, मदिरा का सेवन हो रहा हो उन दम्पतियों को जैसे भी हो पहले इन खराब आदतों से उन्हें छुड़ाया जाये। जब तक एक बोतल की अंदर से सफाई न की जाये उसमें साफ पानी भरना व्यर्थ है। ठीक ऐसे ही ऐसे निर्धन घरों में दम्पतियों के अंदर भरी हुई मांस-मदिरापान, अकर्मण्यता, आलस्यपन, अंधविश्वास जैसी खराबी है। उस पर शासन की ओर से मिलने वाली सहायता तथा अन्य प्रयास सार्थक नहीं होंगे। सब व्यर्थ हो जायेंगे। अतः आवश्यक है समाज में फैली इस गंदगी को साफ किया जाये। इसमें ग्रामपंचायत व समाजसेवी समितियों की भूमिका अहम् हो सकती है। घर-घर जाकर या सामूहिक बैठक आयोजित कर समझाईस दी जा सकती है। ये प्रयास निरंतर होने चाहिए। धीरे-धीरे गांधी-दर्शन व अहिंसावादी कार्यों व विचारों से एक आदर्श घर संसार का निर्माण किया जा सकता है। ❑

पुस्तक परिचय

विनोबा का ब्रह्मनिर्वाण

लेखक : बालविजय, प्रकाशक : खादी मिशन सेवा ट्रस्ट के लिए रामदास शर्मा, मैनेजिंग ट्रस्टी, गोपुरी, जिला-वर्धा (महाराष्ट्र), वर्ष : 2014, सहयोग राशि : 100 रुपये।

संत विनोबा का जीवन कर्मयोगी का था। वे आचार्य थे, गुरु थे इस कारण वे आचार्य विनोबा के नाम से जाने जाते थे। विनोबा स्वभाव एवं जीवन साधना की दृष्टि से संत थे। प्रमुख गांधी विचारक एवं लेखक श्री श्रीमन् नारायण ने उन्हें 'ऋषि विनोबा' के रूप में देखा और उनकी जीवनी लिखी। इस प्रकार विनोबा को संत, ऋषि, आचार्य के नाम से संबोधित किया जाता रहा है। उनका जीवन एवं कार्य कर्मयोगी का था—दैनिक जीवन में तपस्या अभिन्न अंग था। पुस्तक के लेखक श्री बालविजय भौतिक शास्त्री हैं और हर कार्य को वैज्ञानिक दृष्टि से देखते-परखते हैं। श्री बालविजय भाई विनोबा के सचिव थे और उनकी हर क्रिया को निकट से देखते थे। उन्होंने विनोबा को ब्रह्मयोगी के रूप में देखा। उनकी पुस्तक 'विनोबा का ब्रह्मनिर्वाण' विनोबा के जीवन की समग्रता को गहराई तक पहुंचाती है। उन्होंने लिखा है, ''विनोबा अंतर्मुखी माने जाते थे। उनके जीवन में ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों की एकरूपता थी।'' इस बारे में विनोबा कहते हैं, ''ज्ञान, कर्म व भक्ति की पृथकता मुझे सहन नहीं होती।'' यह बात उनके कर्म और प्रवचन में देखी-समझी जा सकती है। एक ओर उनका जीवन तपस्यामय था, जो दूसरी ओर सत्याग्रह, शिक्षा, भूदान, ग्रामदान, दस्यु आत्मसमर्पण आदि उनके कर्म की पराकाष्ठा थे—यह उनका ऐतिहासिक कार्य है जिसे हमेशा याद रखा जायेगा। विनोबा केवल दार्शनिक नहीं थे, बल्कि वे प्रयोगधर्मी भी थे। विनोबा का 'गीता-प्रवचन' गीता की लोकोपयोगी व्याख्या है। इसी प्रकार विनोबा की ग्रंथ सम्पदा का शिरोमणि शास्त्रीय ग्रंथ है 'स्थितप्रज्ञ दर्शन'। पुस्तक के शीर्षक के संदर्भ में देखें तो विनोबा कहा करते थे, ''मुझे रोग से नहीं, योग से मरना है।'

श्री बालविजय ने विनोबा के जीवन को ब्रह्मनिर्वाण की यात्रा के रूप में देखा है और उनके जीवन को उसी रूप में प्रस्तुत किया है। पुस्तक के अनुक्रम से इस बात की पुष्टि होती है। उन्होंने विनोबा की जीवन-यात्रा को इस क्रम में देखा है—(1) ब्रह्मी स्थिति-सिद्धि की जीवन-साधना-अ-युक्तः (1895-1916) कर्मयोगी की साधकावस्था युक्तः (1916-1951) कर्मयोगी की जीवन-साधना। वि-युक्तः (1951-1966) कर्मयोगी की योग-संन्यास संयुक्त अवस्था। युक्तः (1966-1976) कर्मयोगी की सिद्धावस्था-जीवनमुक्तिः। ब्रह्मनिर्वाण की वेदी पर (1976-1982)। ब्रह्मनिर्वाण का वैज्ञानिक विश्लेषण (30-10-1982 से 15-11-1982)।

विनोबाजी के जीवन एवं कर्म पर लिखी गयी यह जीवनी अध्ययन एवं शोधकर्ताओं के लिए पठनीय है।

(पुस्तक वाणी मंदिर समिति, बी-190, यूनिवर्सिटी मार्ग, बापू नगर, जयपुर-302014 से प्राप्त की जा सकती है।)

–डॉ. अवध प्रसाद

स्मृति-शेष

समाजवादी चिन्तक सुनील का असामयिक निधन

❑ चिन्मय मिश्र

'समाजवादी जनपरिषद' के राष्ट्रीय महामंत्री, प्रखर समाजवादी विचारक, अर्थशास्त्री, आदिवासी-किसानों-मजदूरों-विस्थापितों और युवकों के अनेकों आंदोलन की अगुआई करने वाले समाजवादी नेता और मासिक 'सामयिक वार्ता' के संपादक साथी सुनील (54 वर्षीय) का 20 अप्रैल को रात 11.30 बजे (होशंगाबाद) के अपने निवास स्थान पर पहले उन्हें मस्तिष्क आघात हुआ था, वे अचेतावस्था में चले गये थे।

मध्य प्रदेश के मंदसौल जिले के रामपुरा में जन्मे सुनील ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा से लेकर स्नातक तक की पढ़ाई यहीं से पूरी की। इसके बाद उन्होंने जे.एन.यू. (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) दिल्ली से अर्थशास्त्र विषय में एम.ए. (गोल्ड मेडलिस्ट) की पढ़ाई पूरी की। अपना शोध-कार्य बीच में ही छोड़कर मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के केसला क्षेत्र के गरीबों, आदिवासियों, महिलाओं के बीच 1981 में जमीनी कार्य शुरू किया था। उन दिनों इस इलाके में देश के वरिष्ठ समाजवादियों की पहल पर 'लोहिया अकादमी' का गठन हुआ था और पास के ही इटारसी कस्बे के समाजवादी युवा स्व. राजनारायण ने आदिवासियों के बीच अपनी पैठ बना ली थी। स्व. राजनारायण और कुछ अन्य साथियों के साथ मिलकर सुनील भाई ने किसान आदिवासी संगठन बनाया। 1984 में वे पूर्ण रूप से केसला आकर बस गये और उन्होंने संघर्ष, रचना एवं चुनाव का समन्वय रखकर होशंगाबाद को कर्मस्थली बनाया। इसी दौरान समाजवादी आंदोलन की वरिष्ठ सहयोगी स्मिता के साथ उनका विवाह हुआ। गांधी और लोहिया के विचारों को आत्मसात कर सुनील भाई ने सादगीपूर्ण जीवन बिताया। यूँ तो सुनील भाई का कार्यक्षेत्र पूरा देश रहा है, लेकिन उनका सघन कार्यक्षेत्र होशंगाबाद, हरदा तथा बैतूल रहे।

राजनीतिक जीवन : उन्होंने युवजन सभा, समता संगठन के माध्यम से काम शुरू किया था जो वर्ष 1995 में किशन पटनायक के नेतृत्व में समाजवादी जनपरिषद् राजनैतिक दल बना। दिल्ली में ही आपने छात्र संघ का चुनाव लड़ा। सन् 2004 में आपने होशंगाबाद लोकसभा क्षेत्र से सांसद का चुनाव लड़ा। आदिवासियों और वंचित तबके के कई आंदोलनों को उन्होंने दिशा दी। तवा बांध विस्थापितों के संघर्ष को उन्होंने 1995 में नेतृत्व दिया और बाद में देश के सबसे सफल मत्स्य सहकारी संघ का संचालन भी किया। हाल ही में उनका अंतिम आंदोलन होशंगाबाद के पास मालाखेडी में नारी जागृति मंच के साथ मिलकर शराबबंदी को लेकर था। 7 अप्रैल को भोपाल में उन्होंने शिक्षा के अधिकार पर अपना अंतिम उद्‌बोधन दिया।

सुनील भाई को कई बार आदिवासियों के सवालों को सामने रखने के लिए पुलिस यातना का शिकार होना पड़ा, उन्होंने कई बार जेल यात्राएं कीं। सुनील भाई ने विभिन्न मुद्दों पर पदयात्राएं भी कीं। इनमें प्रमुख हैं 1983 में असम आंदोलन के समर्थन में दिल्ली से गुवाहाटी तक साइकिल यात्रा। 1984 में सिख विरोधी दंगों से दुखी होकर दिल्ली से अमृतसर तक की पदयात्रा की। 1986 में हजारों आदिवासियों को साथ लेकर भौंरा (बैतूल) से भोपाल तक पदयात्रा की। 1993 में केसला में पानी की समस्या को लेकर 'पानी लाओ संघर्ष मोर्चा' के तहत केसला-होशंगाबाद तक पैदल यात्रा की।

उन्होंने कई किताबें लिखीं, उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने छोटी-छोटी पुस्तकों से विश्व में चल रही आर्थिक अनियमितताओं और वंचितों के सवालों को आमजन के समझने लायक बनाया। 1984 में सिख दंगों के बाद उन्होंने दो किताबें लिखीं, उनमें से एक किताब 'ये बर्बरता कहां छिपी हुई थी' बहुत ही चर्चित रही। 1991 में शुरू हुए आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत में उन्होंने कई किताबें लिखीं। उन्होंने किशन पटनायक के आलेखों के संग्रहों का संपादन भी किया, उनमें से प्रमुख है 'विकल्पहीन नहीं है दुनिया'। हाल ही में आयी उनकी एक किताब बहुत ही चर्चित रही, जिसका नाम है 'भ्रष्टाचार को कैसे समझें'। इसके अलावा उन्होंने समसामयिक मुद्दों पर लागतार पैनी नजर के साथ और आम जन के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर लेखन किया। देशभर में अलग-अलग जगहों पर चल रहे आंदोलनों में सुनील भाई की सक्रिय भागीदारी थी। सुनील भाई की इच्छा थी कि सभी जनांदोलनों के बीच समन्वय रहे और इसलिए वे प्रयासरत भी थे। उन्होंने 1982 में ही जनांदोलन समन्वय समिति बनायी। उसके बाद भी वे जनांदोलनों के राष्ट्रीय समन्वय (एनएपीएम) और मध्य प्रदेश में जन संघर्ष मोर्चा के साथ सक्रिय रहे। उनके परिवार में पत्नी स्मिता, बेटा इकबाल अभिमन्यु और बेटी शिवली वांजा हैं। आपके पिता डॉ. रामप्रताप गुप्ता अर्थशास्त्र के प्राध्यापक रहे हैं और अभी भी नियमित रूप से लेखन कार्य कर रहे हैं। *(सप्रेस)*

'सर्वोदय जगत'
के सभी सुहृद पाठकों, ग्राहकों, लेखकों व शुभ-चिन्तकों से अनुरोध है कि अपने समसामयिक महत्त्वपूर्ण
आलेख
व क्षेत्रीय कार्यक्रमों की
रपट
पत्रिका के लिए जरूर भेजें। आपके सहयोग की सादर अपेक्षा है। –सं.

यथार्थ लोकतंत्र में जनता की शक्ति सर्वोपरि

संस्थान के निदेशक डॉ. अवध प्रसाद ने बताया कि वरिष्ठ गांधी विचारक, स्वतंत्रता सेनानी एवं कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष स्व. सिद्धराज ढड्ढा की स्मृति में 18 अप्रैल, 2014 को स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। विनोबा ज्ञान मंदिर में आयोजित इस स्मृति व्याख्यान का विषय था, ''भू-स्वामित्व : विचार और व्यवहार''। इस व्याख्यान के विषय का विशेष महत्त्व इसलिए है कि 18 अप्रैल, 1951 में आचार्य विनोबा भावे ने तेलंगाना के पांचमपल्ली गांव से भूदान आंदोलन की शुरुआत की थी, जो भू-स्वामित्व को नयी दिशा देती है। उन्होंने 'सबै भूमि गोपाल की' अवधारणा को वैचारिक आधार दिया और इसके लिए ग्रामदान की उद्घोषणा की। आज का व्याख्यान इस संदर्भ को ध्यान में रखकर समर्पित था। व्याख्यान में तीन वक्ताओं ने अपने विचार रखे—1. श्री अण्णा हजारे, 2. श्री पी. वी. राजगोपाल, 3. श्री आरिफ मोहम्मद खाँ।

अपने व्याख्यान में श्री अण्ण हजारे ने पक्ष एवं दलमुक्त शक्ति मजबूत करने तथा संविधान के आधारभूत निर्देश को व्यवहार में लाने के लिए जनशक्ति के दबाव बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जनता जागेगी तभी उसकी शक्ति बढ़ेगी। सच्चा लोकतंत्र में जनता की शक्ति सर्वोपरि है और वही शक्ति पक्ष एवं राजनैतिक दल पर दबाव बना कर उसे नियंत्रण में रखेगी। इसके लिए युवा शक्ति को जगाना होगा। उन्होंने कहा कि यह कार्य ग्रामसभा को मजबूत करने से होगा—गांव के लोग एकजुट होकर अपनी शक्ति बढ़ायेंगे और इस प्रकार देश में सच्चा लोकतंत्र मजबूत होगा, लोकशक्ति मजबूत होगी और दल एवं पक्ष पर नियंत्रण भी रहेगा। उन्होंने 'असली आजादी अभियान' की ओर युवकों एवं सामान्य जन को इस कार्य में भागीदार होने के लिए आवाहन किया। उन्होंने घोषणा की कि आज के पवित्र दिन 18 अप्रैल को विनोबा ज्ञान मंदिर में इस अभियान का प्रारंभ होना गौरव की बात है, शुभ लक्षण है। आगे की योजना पर उन्होंने कहा कि 9 अगस्त क्रांति दिवस पर मुम्बई में देश के सभी जिलों के प्रतिनिधियों की बैठक में आगे के कार्यक्रम की घोषणा होगी। यह सतत् चलने वाला अभियान है, इस आंदोलन से जनशक्ति मजबूत होगी और भारतीय संविधान की मूल भावना को व्यवहार में उतारा जा सकेगा।

एकता परिषद् के संस्थापक श्री पी. वी. राजगोपाल ने विनोबाजी एवं श्री सिद्धराज ढड्ढा का स्मरण करते हुए देश में जमीन, वन-संपदा एवं वन-स्वामित्व की अवधारणा एवं व्यवहार में हो रहे परिवर्तन की तथ्यात्मक व्याख्या की। उन्होंने कहा कि आज जमीन (प्राकृतिक संपदा) का स्वामित्व कुछ लोगों के हाथों में सौंपने का सुनियोजित प्रयास किया जा रहा है। इसका सीधा परिणाम खेती करने वालों के हाथों से जमीन चली जा रही है, बिक रही है, छीनी जा रही और उस पर कुछ लोगों का स्वामित्व स्थापित हो रहा है। यह दिशा भविष्य के लिए, सामान्य जन के लिए 'जीवन की समस्या' बन रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जो कानून बने हुए हैं उसे केवल लागू कर दिया जाय तो कई समस्याओं का समाधान हो सकता है। भूदान में मिली जमीन का भूमिहीनों में वितरण एवं उस पर कब्जा दिलाना महत्त्वपूर्ण कार्य है, जिसे सरकार कर सकती है। इसी प्रकार आवास की जमीन पर रहने वाले का अधिकार (वासगीत भूमि) को कानून सम्मत बनाना होगा, रहने वाले के नाम करना होगा। जमीन एवं जंगल संबंधी बने कानूनों को लागू करने से सामान्यजन की समस्याएं कम हो सकती हैं, उन्हें आवास एवं खेत पर अधिकार प्राप्त हो सकता है जो कि रोजगार का मजबूत माध्यम है। श्री राजगोपालजी ने इस बात के लिए गहरा दुख व्यक्त किया कि आज बड़े पैमाने पर जमीन खरीदने का धंधा चल रहा है। यहां तक कि गूगल पर अमेरिका में बैठे भारत में जमीन का सौदा किया जा रहा है। बड़ी कंपनियों एवं जमीन के व्यापारी किसी भी प्रकार से हजारों एकड़ जमीन खरीद रहे हैं। सरकार भी बड़ी मात्रा में सार्वजनिक जमीन का आवंटन कर रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि जमीन स्वामित्व समाज का और खेती करने वाले लोगों का हो और उस पर खेती करने का अधिकार हो, यही समस्या का एकमात्र समाधान है। इसके लिए व्यापक जन आंदोलन एवं प्रभावी जनशक्ति बनानी होगी।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री श्री आरिफ मोहम्मद खाँ ने कहा कि पिछले 62 वर्षों में भौतिक विकास के बावजूद हम संविधान की भावना से दूर होते गये हैं। सत्ता का मोह इतना मजबूत हो गया है कि जनप्रतिनिधि उसके लिए गलत से गलत काम करने में संकोच नहीं करता है। राजनीति अधिकार और प्रतिष्ठा का माध्यम बन गयी है। जिसे यह नहीं मिला वह सामान्य जन है, उपेक्षित है और हर पग पर शोषण, दमन का शिकार होता है। यही कारण है कि उपेक्षा, शोषण, दमन से बचने के लिए लोग दल और पक्ष के अधीन होने की ओर बढ़ते हैं। श्री आरिफ भाई ने याद दिलाया कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि सेवा और प्यार से ही युवाशक्ति मजबूत होगी और देश की शक्ति बढ़ेगी। आज अण्णा हजारे की मुहिम 'असली आजादी अभियान' इस कार्य को नयी दिशा देने का काम कर रहा है यह हमारे लिए शुभ लक्षण है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सिंह ने धन्यवाद देते हुए इस काम में सहयोग मांगा। सभा में उपस्थित अनेक लोगों ने इस अभियान के लिए समय व शक्ति लगाने की घोषणा की। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के डॉ. अमित कुमार ने किया।

–डॉ. अवध प्रसाद

(18 अप्रैल, 2014 को कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान के संस्थापक स्व. सिद्धराज ढड्ढा की स्मृति में आयोजित व्याख्यान में व्यक्त विचारों का सार संक्षेप।)

गतिविधियां एवं समाचार

कस्तूरबा गांधी की पुण्यतिथि नशाबंदी रूप में : गांव गढ़ी भरल जिला करनाल में 22 फरवरी, 2014 को कस्तूरबा पुण्य-तिथि को हरियाणा में जिला करनाल सर्वोदय मंडल के कार्यकर्ताओं ने नशाबंदी के रूप में धूमधाम से मनाया। गांव गढ़ी भरल के सरपंच श्री इरफान ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अंग्रेजो देवी महिला मंडल की अध्यक्षा कुरबाना और आशा वर्कर अफसाना व संजीदा के प्रयासों से गांव के नौजवान व बुजुर्गों ने तो भाग लिया ही साथ ही बड़ी संख्या में आसपास के कई गांवों से पधारी महिलाओं ने भी भाग लिया। अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद के महामंत्री महावीर त्यागी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री त्यागी ने सबका आह्वान किया कि शराब जो सब बुराइयों की जड़ है उसके खिलाफ एकजुट होकर आंदोलन शुरू करें। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में महात्मा गांधी ने शराब के ठेकों के विरुद्ध सत्याग्रह बहनों से ही कराया था।

श्री त्यागी ने हरियाणा राज्य सरकार से नशाबंदी करने को कहा। उन्होंने कहा कि पहले कदम के तौर पर गांवों की सभी शराब के ठेके तुरंत प्रभाव से बंद करे और पांच साल में संपूर्ण शराबबंदी कर पुण्य के भागीदार बनें। यदि सरकार हमारी यह मांग नहीं मानती है तो हरियाणा प्रदेश सर्वोदय मंडल नशाबंदी परिषद के साथ मिलकर प्रदेश की अन्य धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं को जोड़कर पूरे प्रदेश में नशाबंदी आंदोलन करेगा। सभा में उपस्थित भाई-बहनों ने एक स्वर में इस आंदोलन को शुरू करने की पुरजोर मांग की और कहा कि हम आंदोलन को तन, मन और धन से पूरा सहयोग देंगे।

इसी अवसर पर युवा ग्रामीण विकास समिति, ग्राम गढ़ी भरल ने एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया, जिसमें गांव के ही नहीं बल्कि आसपास के गांवों के नौजवानों ने रक्तदान किया। रक्तदान शिविर की एक खूबी यह थी कि काफी बहनें रक्तदान करने पहुंचीं। बहनों में रक्त की कमी पायी गयी, इस कारण केवल दो बहनें ही रक्तदान कर सकीं।

दोनों कार्यक्रमों के आयोजन में जिला सर्वोदय मंडल, करनाल के श्री मुसिलम चौहान और उनकी टीम ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। साथ ही युवा ग्रामीण विकास समिति गढ़ी भरल का पूरा-पूरा सहयोग रहा।

× × ×

मतदाता जागरण अभियान : हरियाणा प्रदेश सर्वोदय मंडल और 'सजग' संस्था ने मिलकर मतदाता जागरण अभियान चलाया। दो टोलियों ने जिला पानीपत और जिला करनाल में यह अभियान प्रारंभ किया। करनाल की टोली में सर्वश्री मुस्लिम चौहान, रामरिख सैनी, कृष्णकुमार नम्बरदार, मास्टर धर्मवीर नरेश सैनी लेक्चरर व रामफल पूरे समय उपस्थित रहे। इन लोगों ने गढ़ीभरल से अभियान शुरू किया और बलहेड़ा, बरसतदेवीपुर, मंगलगढ़, मुंडोगढ़ी, सदरपुर, लालूपुर, अमृतपुर, कलेहड़ी, डिंगर माजरा और कैमला आदि दो दर्जन गांवों में मतदाता जागरण अभियान चलाया। श्री मुस्लिम चौहान ने बताया कि लोगों ने हमारी बातों को अच्छी तरह सुना। गांवों में पर्चे भी बांटे गये।

दूसरी टोली के नायक थे श्री आजाद सिंह आट्टा। इस टोली में मास्टर जयभगवान शर्मा, महावीर त्यागी, 'सजग' के श्री सुरेश कुमार, श्री जमशैद अली त्यागी। कार्यक्रम की शुरुआत आट्टा गांव से कर खेजकीपुर, बिलासपुर, हथवाल, कारकौली, राकसेड़ा, बुढ़नपुर, बसेड़ा, देहरा, महावटी, हल्दाना, गढ़ी त्यागियान, पट्टीकल्याणा, समालखा, जौरासी, ढिकाडला, पावटी और भाड़ेवाल माजरी में मतदाता जागरण का कार्य किया। हमें अधिक सफलता इस कारण से मिली कि एक साथी एक दिन पहले ही उस गांव के लोगों से संपर्क हेतु पहुंच जाते थे। गांव के बच्चों को लेकर जुलूस निकालते थे। इससे माहौल तैयार होता था और गांव के अधिकतर लोग हमारी बात सुन पाते थे। अनुभव आया कि पूर्व तैयारी से सफलता अधिक मिलती है और घर-घर जाकर समझाना तथा पर्चे देने से भी अधिक सफलता मिलती है। **–महावीर त्यागी**

देवनार गोरक्षा सत्याग्रह : देवनार गोरक्षा सौम्यतम सत्याग्रह 33 साल से लगातार चल रहा है। इधर इसमें कुछ शिथिलता जरूर आयी है। 11 जनवरी को इसकी वर्षगांठ पर चिन्तन कर फिर से जान फूंकना तय किया गया। अण्णा साहब जाधव ने आपने आपको वहां गड़कर बैठना तय किया है और वे बैठ गये हैं। अण्णा साहब जाधव के ज्ञान, प्रज्ञा, विनोबा के साथ उनका सत्संग और बाबा के आदेशानुसार उनका काम हम सब जानते हैं। उनके निजी निस्कांचन जीवन एवं चारित्र्य संपन्नता से हम सभी परिचित हैं।

अब सत्याग्रह में कम से कम हम एक हफ्ते के लिए ज्यादा से ज्यादा 15 दिन के लिए सभी को 20 या 25 युवा किसान, अन्य युवा भेजने हैं। प्राथमिकता किसान युवाओं को दें। आपका गांवों से संपर्क है तो यह सहज संभव है, प्रवास अवधि छोड़कर एक हफ्ते या ज्यादा से ज्यादा 15 दिन इतना समय उन्हें वहां रहना है। इन्हें सत्याग्रह में सुबह प्रभात फेरी, देवनार सत्याग्रह में हाजिरी सुबह देनी है। दोपहर से इनका सर्वोदय दर्शन एवं दुनिया के अन्य विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कराया जायेगा। इससे ये युवा सर्वोदय दर्शन को ठीक से समझ पायेंगे। इन युवाओं को ज्ञान-आचरण में गहरे ले जाना, यह हमारी जिम्मेदारी होगी। आपको भी उन्हें तैयार करना है। वह बात यहां अनायास ही पूरी हो सकती है। ये ही युवा आपके तरुण शांति सैनिक बनकर आगे काम करेंगे।

आपकी ओर से कब से और कितने युवा आ सकते हैं, यह फोन कर बतायें या ई-मेल करें। ये युवा (लड़के-लड़कियां) पूरे एक हफ्ते या 15 दिन के लिए आते हैं तो हमें उनका दोनों ओर का प्रवास खर्च (रेल का स्लीपर क्लास, टिकट आवश्यक), जिनको रेल की सुविधा नहीं उनका बस किराया अधिकतम 700 रुपये प्रवास खर्च करने में हमें आनंद होगा।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें— डॉ. सुगन बरंठ (मो. 09422252791)।

–डॉ. सुगन बरंठ

क्या दिल है हिन्दुस्तानी?

❑ श्रीमती सुमन शर्मा

यह भारत देश बड़ा ही विचित्र है। अनेक तरह के त्यौहार। उत्तर भारत के त्यौहार, दक्षिण, पंजाब, बंगाल के त्यौहार! अनेक प्रकार की विविधता लिये हुए। पूरा देश इसी में रंग जाता है। इन सब से अलग एक और त्यौहार है जो पूरे देश को एक साथ अपने में लपेट लेता है। वह है चुनावी त्यौहार। जिसका रंग आजकल सबपर चढ़ा हुआ है। लोगों के सर पर तरह-तरह की टोपियाँ दिखायी पड़ती हैं, अपने-अपने दल की विशेषता प्रकट करते हुए।

दिमाग में राजकपूरजी की प्रसिद्ध फिल्म 'श्री 420' का गाना—*'मेरा जूता है जापानी, पैण्ट इंगलिस्तानी, सर पर लाल टोपी रूसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी'*—गूँज रहा है। राजकपूरजी के शरीर पर जूता, पैण्ट, टोपी जरूर विदेशी मतलब अजीबो-गरीब, जूता फटा हुआ, छोटी-छोटी पैण्ट, टोपी भी अपना अलग अंदाज बयाँ कर रही थी, जिन्हें उन्होंने विदेशी नाम दिया था, फिर भी उन्होंने अपने दिल को सुरक्षित बचाकर रख लिया था। उस पर उन्होंने विदेशी रंग नहीं चढ़ने दिया था। उसमें दया, ममता, स्नेह, प्रेम सब भरा हुआ था। देश-प्रेम की भावना से ओत-प्रोत था।

अब समय बदल गया है। चुनाव हो या त्यौहार विदेशी चीजों की भरमार हो गयी है। नेतागण रैलियों, रोड शो से लोगों को लुभा रहे हैं। साथ ही अपना यश-गान व दूसरे दलों का अप-यश बखान रहे हैं। तड़क-भड़क व दिखावे का जोर है। देशी चीजों से काम नहीं चलता, सब कुछ 'विदेश' का होना चाहिए। वोटर्स को रिझाने के लिए कुछ नया होना चाहिए। अतः प्रोजेक्टर, पेन, कार का परफ्यूम, बैटरी फैन, थ्री-डी कैलैण्डर, पंखा सब हाजिर है और वह भी विदेशी—चीनी। चाइनीज सामान का प्रचार में भरपूर प्रयोग हो रहा है। चीन ने अपने पड़ोसी की नब्ज पहचान ली है। उसने अपने पड़ोसी भारत को अच्छी तरह समझ लिया है कि यहाँ कोई रोक-टोक नहीं है। अपने देश में माल बनाओ और भारत में खपा दो। पार्टी के नेताओं को आराम। ऑर्डर दिया—माल हाजिर। पैसा विदेश जा रहा है, कोई नुकसान नहीं, देश की अर्थ-व्यवस्था बिगड़ रही है, क्या फर्क पड़ता है?

वैसे चीन के दिमाग की तरीफ करनी ही पड़ेगी। पहले से सब कुछ भाँप लिया। हवा का रुख पहचान कर सामान बाजार में उतार दिया और समय से लाभ उठा लिया। यहां की सरकार तथा नेता पागल हैं, जिन्हें इतनी समझ नहीं है कि हम अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। अपने देश के कारखानों, कारीगरों को प्रोत्साहित न करके बाहर के सामान का उपयोग कर रहे हैं। इस देश में हुनर व कुशलता की कमी नहीं है। चुनाव के समय हजारों लोग काम में लगे रहते थे। हर पार्टी के लिए टोपी, झंडा, बैनर, बैण्ड, दुपट्टे, साड़ी और पता नहीं क्या-क्या बँटवाया जाता था। प्रेस में पैम्पफ्लैट, पर्चे छपवाये जाते थे। सब काम के बोझ से दबे रहते थे। इन सबसे अच्छी कमाई होती थी। भविष्य की आशाएँ इस पर टिकी रहती थीं। किसी को अपनी बेटी के हाथ पीले करने होते थे, कोई बच्चों की पढ़ाई का सपना देखता था। जब सब प्रचार सामग्री विदेश से ही आ जायेगी तब इन सबके सपने चकनाचूर होने ही हैं।

कोई भी योजना देश-हित या जन-हित को सोचकर नहीं बनायी जाती है। बीमार कारखानों व फैक्टरियों को आसान किश्तों पर ऋण देकर फिर से चलवाया जाये। कुटीर उद्योगों को विकसित किया जाये। पारंपरिक हस्त-उद्योगों के प्रति लोगों में आकर्षण पैदा किया जाये। उन्हें बाजार उपलब्ध कराया जाये, जिससे लोगों को रोजगार मिले। खुशहाली आये। इसके विपरीत अपने देश के हुनर को नष्ट करके दूसरे देश की कंपनियों को अहमियत दी जाती है। उत्तर प्रदेश की सरकार ने 12वीं पास छात्र-छात्राओं को साइकिल बाँटने की योजना बनायी। अच्छी योजना होती यदि साइकिल अपने ही देश की किसी कंपनी की बनी होती। लेकिन ऐसा नहीं होता है क्योंकि मन में हीन भावना भरी होती है कि देश की बनी चीज अच्छी नहीं होती। बस किसी मल्टीनेशनल कंपनी को ऑर्डर थमा दिया जाता है। लैपटॉप भी बाँटा गया, इससे कहीं अधिक उपयोगी वस्तु बाँटी जा सकती थी लेकिन बड़ी कंपनी को सम्मानित करके स्वयं कृतार्थ जो होना था। अपने देश पर गर्व करना, यहां के लोगों को सम्माननीय दृष्टि से देखना, अपनी धरोहर और अपने देश की चीजों की सराहना करना, सीखा ही नहीं है। वर्षों की गुलामी का प्रभाव वर्षों बाद ही जायेगा, तब तक इतनी देर हो चुकी होगी कि न हम रहेंगे और न हमारा देश ही इस रूप में रहेगा, क्योंकि तेजी से हम आर्थिक गुलामी की ओर बढ़ रहे हैं। अब तो दिल ही हिन्दुस्तानी नहीं रहा है!!! ❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) अशोक भारत (प्रकाशक), सुरभि प्रिन्टर्स, इंडियन प्रेस कॉलोनी, मलदहिया वाराणसी से मुद्रित तथा सर्व सेवा संघ-परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001, फोन एवं फैक्स नं. 0542-2440385 से प्रकाशित। संपादक : बिमल कुमार। छपी प्रतियाँ : 1500